بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

सीरतुन्नबी विशेषांक

वर्ष 6
संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly
BADAR Qadian
HINDI

अंक
39- 40
मूल्य
575 रूपए
वार्षिक

Postal Reg. No. GDP 45/2020-2022 30 सितम्बर -7 अक्टूबर 2021 ई. ● 30 तबूक-7 इखा 1400 हिज्री शम्सी ● 22-29 सफ़र 1443 हिज्री कमरी

मस्जिद नब्वी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का एक सुन्दर दृश्य

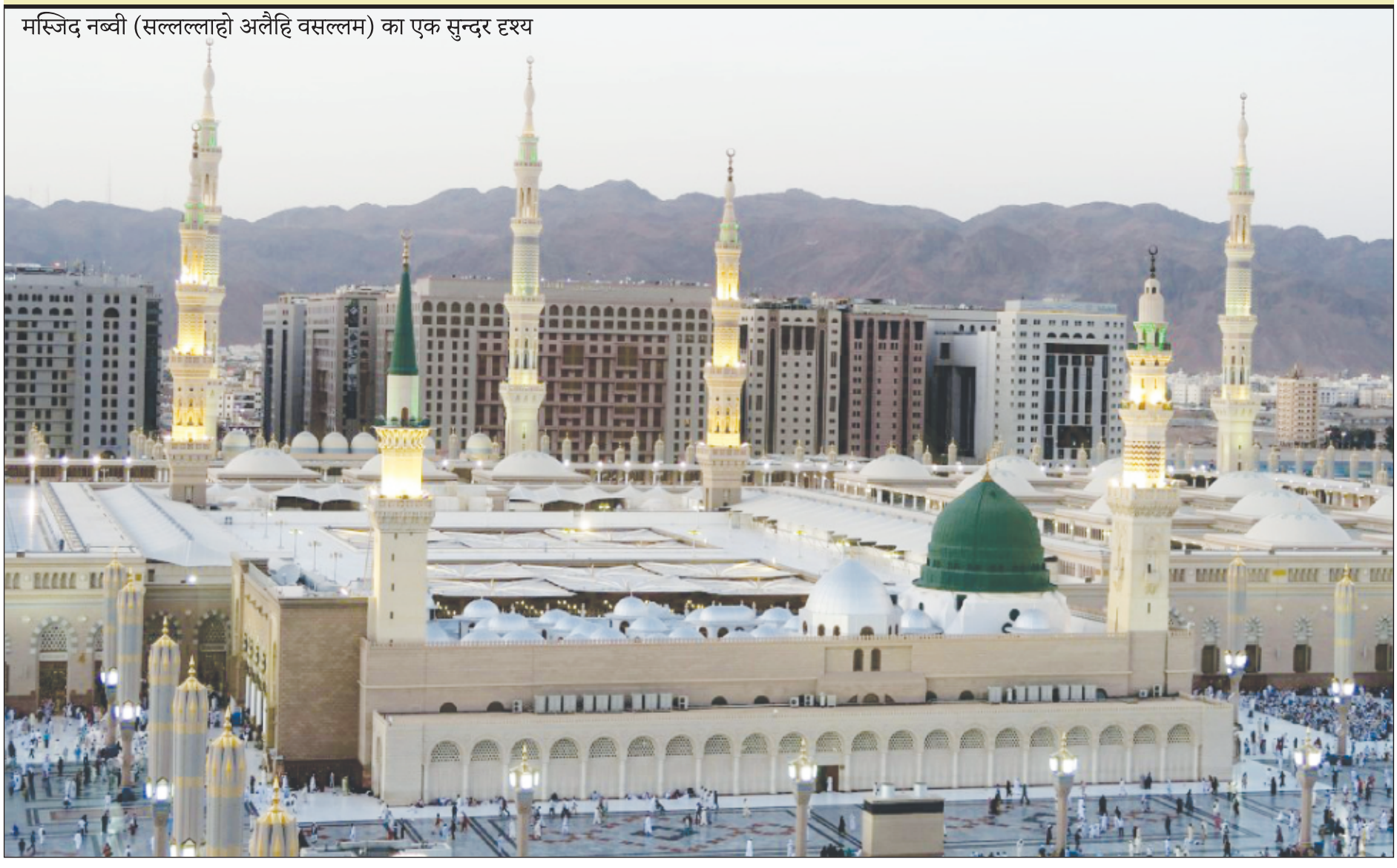

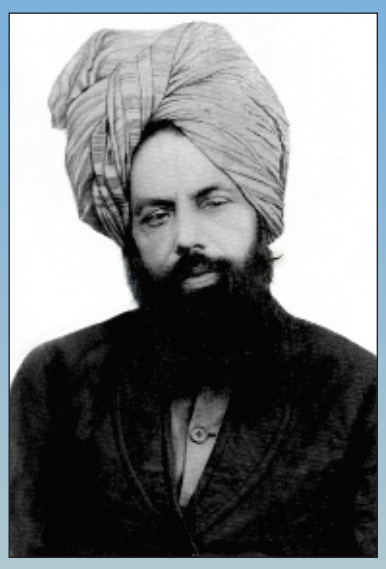

समस्त नबुव्वत के सिलसिले में से उच्च स्तर का जवाँ मर्द (महान) नबी
सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

इस युग के इमाम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हम जब इन्साफ़ की नज़र से देखते हैं तो समस्त सिलसिला नबुव्वत में से उच्च स्तर का जवाँ मर्द नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और ज़िंदा नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और ख़ुदा का उच्च स्तर का प्यारा नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम केवल एक मर्द को जानते हैं अर्थात वही नबियों का सरदार रसूलों का गर्व समस्त मुर्सलों का सरताज जिसका नाम मुहम्मद मुस्तफ़ा तथा अहमद-ए-मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है जिसके अंतर्गत दस दिन चलने से वह रोशनी मिलती है जो पहले इस से हज़ार वर्ष तक नहीं मिल सकती थी।"

(सिराज-ए-मुनीर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 12 पृष्ठ 82)

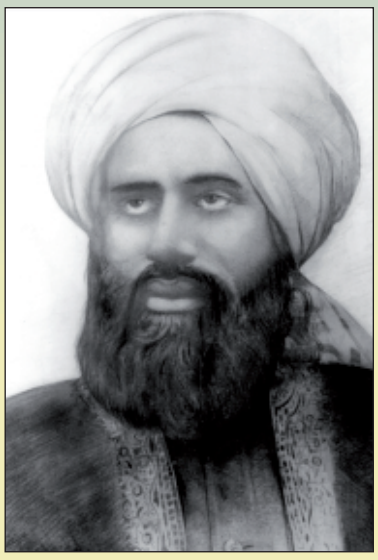

जिसको ख़ुदा तआला ने महान कहा वह कितना महान् होगा

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किस दर्जा का इन्सान था? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर्जा का पता लगाना, इस के लिए यह आयतें सामने रखनी चाहिऐं। (1) إِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अल्-क़लम : 5) और दूसरी में फ़रमाता है। وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا (अल्निसा : 114) अल्लाह तआला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को महान् फ़रमाता है और उन पर जो फ़ज़ल हुआ उसे भी महान् फ़रमाया। अब ख़्याल करो कि जिसको ख़ुदा तआला ने महान कहा वह कितना महान् होगा। अब जो रसूल इस शान का है इस के बग़ैर हम को किसी और के मुक़तिदा (जिस का अनुसरण किया जाए) बनाने की चाहत भी क्या हुई।"

(ख़ुतबात-ए-नूर, पृष्ठ 464, ख़ुतबा जुम्मा, 25 मार्च 1910 ई.)

वह मेरी जान है, मेरा दिल है, मेरी मुराद है

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

"वह क्या जानें कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत मेरे अंदर किस तरह सरायत कर गई है। वह मेरी जान है, मेरा दिल है, मेरी मुराद है, मेरा अभीष्ट है, उस की ग़ुलामी मेरे लिए इज़्ज़त का कारण है और उसकी जूतियां उठाना मुझे तख़त-ए-शाही से बढ़कर मालूम देती है, इस के घर में झाड़ू देना के मुक़ाबला में समस्त संसार की बादशाहत फ़ीकी है। वह ख़ुदा तआला का प्यारा है फिर मैं क्यों उससे प्यार न करूँ, वह अल्लाह तआला का महबूब है फिर मैं उस से क्यों मुहब्बत न करूँ, वह ख़ुदा तआला का प्रिय है फिर मैं क्यों उसका सानिध्य तलाश न करूँ।

(अनवारुल उलूम, भाग 2 पृष्ठ 503)

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

साप्ताहिक हिन्दी बदर मसीह मौऊद[अ.] नम्बर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इनामी चैलेंज
हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबले के लिए बुलाया हमने
اِنَّ السُّمُوْمَ لَشَرُّ مَا فِی الْعَالَمِ شَرُّ السُّمُوْمِ عَدَاوَۃُ الصُّلَحَاء

रौम के सम्राट ने कहा था कि यदि मुझे अवसर मिलता तो मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पैर धोता

यदि कोई साबित करे कि मसीह अलैहिस्सलाम के लिए किसी छोटे जागीरदार ने भी ऐसा कहा है तो ऐसे व्यक्ति के लिए एक हज़ार रुपय का नक़द उपहार

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह वैभवी उपहार का चैलेंज हम आपकी पुस्तक नंबर 2 रूहानी ख़ाज़ाएन भाग 9 से प्रस्तुत कर रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-मजीद के चमत्कारों के प्रकट के लिए नूरुल क़ुरआन के नाम से एक पत्रिका जारी फ़रमाई थी लेकिन अत्यधिक व्यस्तता के कारण से इस के दो ही नंबर निकल सके थे। दूसरे अंक अर्थात नंबर 2 में आपने पादरी फ़तेह मसीह निवासी फतेहगढ़ ज़िला गुरदासपुर के उन आरोपों का उत्तर दिया है जो उसने सरवरे कायनात मानव जाती के गौरव ख़ातमुन्नबीयीन निष्पापों और शुद्धआत्माओं के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र पत्नियों पर किए हैं। यहां पर हम पादरी फ़तह मसीह का वह आरोप और उस का उत्तर वर्णन करते हैं जिस पर सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़तह मसीह को एक हज़ार रुपय का निहायत वैभवशाली उपहार का चैलेंज दिया था। पादरी फ़तह मसीह ने उम्मुल मौमिनीं हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शादी पर आरोप लगाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने 9 वर्ष की आयु में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की जो कि शरीयत के विरुद्ध है और इस तरह यह शादी नहीं बल्कि व्यभिचार है। यदि यह कार्य शरीयत के विरुद्ध था तो पादरी फ़तह मसीह को क़ुरआन-ए-करीम से नहीं तो कम अज़ कम तौरेत या इंजील से कोई हवाला देना चाहिए था ताकि ज्ञात होता कि 9 साल की लड़की से शादी करना वास्तव में शरियत के खिलाफ चलना है। लेकिन हवाला पादरी फ़तह मसीह ने किसी आसमानी पुस्तक का नहीं बल्कि गर्वनमैंट अंग्रेज़ी का दिया कि गर्वनमैंट अंग्रेज़ी में शादी की आयु (अठारह18) वर्ष है। गर्वनमैंट अंग्रेज़ी का हवाला देकर यह पादरी पूछता है कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम गर्वनमैंट अंग्रेज़ी में होते तो यह गर्वनमैंट उन से किया व्यवहार करती?

पादरी फ़तह मसीह की यह दुष्टता है कि एक कार्य को शरीयत के ख़िलाफ़ बताकर हवाला किसी आसमानी पुस्तक का न देकर गर्वनमैंट अंग्रेज़ी का देता है। यह पादरी इस क़दर शोख़ और बे-बाक क्यों होते हैं कि पवित्रों के पवित्र, और करोड़ों इन्सान के पेशवा और मार्गदर्शक पर भी ऐसे घटिया आरोप लगाते हुए उन के दिल काँपते नहीं। ऐसी बेशर्मी और निर्लज्जता पर ये कैसे तैयार हो जाते हैं। यह बेबाकी उनसे क्यों घटित होती है इस के सम्बन्ध में हम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ आदेशों प्रस्तुत करते हैं। आप अलैहिस्सलाम

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	कुरआन	2
2	अहादीस	3
3	मल्फ़ूज़ात	4
4	ख़ुत्बा जुम्अ: 20 अक्तूबर 2017 ई	5
5	हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बाहरी तथा आन्तरिक स्वच्छता	11
6	आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक इल्मे नफ़्स के माहिर के रूप में	14
7	तौहीद बारी तआला के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम की शिक्षाएं	15

फ़रमाते हैं :

याद रहे कि वास्तव में पादरी साहिबान तिरस्कार और अपमान और ग़ालियां देने में प्रथम नंबर पर हैं। हमारे पास ऐसे पादरियों की पुस्तकों का एक भंडार है जिन्हों ने अपनी इबारत को सैकड़ों ग़ालियों से भर दिया है।

(नूरुल क़ुरआन नंबर 2 रूहानी ख़ाज़ाएन भाग 9 पृष्ठ 375)

पादरी साहिबान विशेषता क़ुरआन-ए-करीम पर, सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात-ए-अक़्दस-ओ-अतहर पर दरिंदों की तरह क्यों हमला करते हैं, इस पर रोशनी डालते हुए सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"वास्तविकता यह है कि ईसाई पवित्र क़ुर्आन पर बहुत ही नाराज़ हैं और इसका कारण यही है कि पवित्र क़ुर्आन ने ईसाई धर्म के समस्त बाल और पंख तोड़ दिए हैं। एक मनुष्य का ख़ुदा बनना झूठा प्रमाणित कर दिया, सलीब की आस्था और विश्वास को चकनाचूर कर दिया और इंजील की वह शिक्षा जिस पर ईसाइयों को गर्व था, उसका अत्यंत निर्थक और बेकार होना सप्रमाण सिद्ध कर दिया तो फिर ईसाइयों का अपने अहंकार के कारण आवेग में आना अवश्यम्भावी था। अत: वे जो कुछ भी झूठ और मक्कारी से काम लें थोड़ा है।"

(चश्म-ए-मसीही, रूहानी ख़ाज़ाएन भाग 20 पृष्ठ 343)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"पादरियों ..... की छाती पर इस्लाम ही पत्थर है अन्यथा बाक़ी समस्त धर्म उन के निकट नामर्द हैं। हिन्दू भी ईसाई हो कर इस्लाम के ही खण्डन में पुस्तकें लिखते हैं। रामचंद्र और ठाकुरदास ने इस्लाम के खंडन में अपना सारा ज़ोर लगा कर पुस्तकें लिखी हैं। बात यह है कि उनका कांशनस कहता है कि उन की हलाकत इस्लाम ही से है। स्वभाविक तौर पर भय उन्ही को पड़ता है, जिनके द्वारा हलाकत होती है। एक मुर्ग़ी का बच्चा बिल्ली को देखते ही चिल्लाने लगता है। इसी तरह विभिन्न धर्म के अनुयाई साधारणता और पादरी विशेषता जो इस्लाम के खंडन में ज़ोर लगा रहे हैं, यह इसी लिए कि उनको विश्वास है, बल्कि अंदर ही अंदर उनका दिल उन को बताता है कि इस्लाम ही एक धर्म है, जो झूठों को पीस डालेगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग प्रथम पृष्ठ 110 प्रकाशन क़ादियान 2003)

एक और कारण है जो ये देसी और इस्लाम से मुर्तद पादरी जी जान से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हमला करते हैं। सय्यदना

शेष पृष्ठ 19 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रोपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

निसंदेह अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर रहमत भेजते हैं

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम भी उस पर दुरूद और ख़ूब ख़ूब सलाम भेजो

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का महान स्थान और मर्तबा क़ुरआन-ए-मजीद की आयात की रौशनी में

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारित सालिह, शहीद, सिद्दीक़ और नबी का स्थान दिला सकती है।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ○

(अल्निस: - 70)

अनुवाद : और जो भी अल्लाह की और उस के रसूल की आज्ञाकारित करे तो यही वे लोग हैं जो उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम किया है (अर्थात) नबियों में से, सिद्दीक़ों में से, शहीदों में से और सालेहीन में से और ये बहुत ही अच्छे साथी हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला इस आयत की व्याख्या में फ़रमाते हैं :

"इस आयत में बहुत से ध्यान देने योग्य विषय हैं। पहला यह कि रसूल से अभिप्राय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं अर्थात यह विशेष रसूल है।

दूसरा यह कि यदि तुम इस रसूल की आज्ञाकारित करोगे तो उन लोगों में से हो जाओगे जिनमें नबी भी शामिल हैं और सिद्दीक़ भी और शहीद भी और सालिह भी। इस का अर्थ यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण में नबी भी आ सकता है, अर्थात वह जो इस रसूल की आज्ञाकारित करने वाला हो।

इस जगह مَعَ के अर्थ कुछ उल्मा की तरफ़ से इसरार के साथ यह किए जाते हैं कि वह उनके साथ होंगे और उनमें से नहीं होंगे। इस के समर्थन में वे कहते हैं कि حَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا फ़रमाया है कि वह बेहतरीन साथी होंगे अर्थात वे नबियों के साथ होंगे स्वयं नबी नहीं होंगे। इस आयत का यह अनुवाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अत्यधिक गुस्ताख़ी है। क्योंकि इस सूरत में इस आयत का अर्थ यूं बनेगा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारित करने वाले नबियों के साथ होंगे परन्तु स्वयं नबी न होंगे। वह सिद्दीक़ों के साथ होंगे परन्तु स्वयं सिद्दीक़ नहीं होंगे। वह शहीदों के साथ होंगे परन्तु स्वयं शहीद नहीं होंगे। वह सालेहीन के साथ होंगे परन्तु स्वयं सालेह नहीं होंगे। क़ुरआन-ए-मजीद की कई आयतों में مَعَ का शब्द مِنْ के अर्थों में प्रयोग हुआ है। उदाहरणत: देखें आले इम्रान 194, अल् निसा 147, अल् हिज्र

इसके अतिरिक्त यहां اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ के बाद مِنَ النَّبِيّٖنَ फ़रमाया गया है। यह مِنْ ब्यानिया कहलाता है, अभिप्राय है उनके साथ अर्थात उनमें से।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारित ख़ुदा का प्रेम प्राप्त करने का माध्यम है

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ (आले इमरान : 32)

अनुवाद : तू कह दे यदि तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरा अनुसरण करो। अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा, और तुम्हारे गुनाह बख़श देगा। और अल्लाह बहुत बख़शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।

अल्लाह की प्रसन्नता का माध्यम

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ○

(अल् मायदा : 36)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए अल्लाह का सयंम धारण करो और इस के प्रेम का माध्यम ढूंढ़ो और उस की राह में जिहाद करो ताकि तुम सफ़ल हो।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला इस आयत की व्याख्या में फ़रमाते हैं :

अल्लाह की तरफ़ वसीला (माध्यम) पकड़ने में वसीला (माध्यम) से अभिप्राय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। अब सीधे अल्लाह तआला से कोई सम्पर्क नहीं हो सकता जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वसीला (माध्यम) धारण न किया जाए। अज़ान के बाद की दुआ भी जिस में वसीले (माध्यम) का वर्णन है , इसी विषय का समर्थन करती है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वजूद क़ौम के लिए तावीज़ है

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ○ (अन्फाल : 34)

अनुवाद : और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें अज़ाब दे जब कि तू उनमें मौजूद हो और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें अज़ाब दे जबकि वे क्षमा मांगते हों।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अहयाए मौता का अर्थ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ○

(अन्फाल : 25)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए अल्लाह और रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहा करो जब वह तुम्हें बुलाए ताकि वह तुम्हें ज़िन्दा करे और जान लो कि अल्लाह इन्सान और उनके दिल के मध्य हायल होता है और यह भी (जान लो) कि तुम उसी की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला इस आयत की व्याख्या में फ़रमाते हैं :

"इस आयत में मुर्दो के ज़िन्दा होने की स्पष्ट व्याख्या मौजूद है। ग़लती से ईसाई हज़रत ईसा के اِحیاءِ موتٰی से ज़ाहिरी तौर पर मुर्दों को ज़िन्दा करना ख्याल करते हैं। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रुहानी मुर्दों को अपनी तरफ़ बुलाया कि आओ मैं तुम्हें ज़िन्दा करूँ तो यह बात खुल गई कि वे क़ब्रों में पड़े हुए मुर्दे नहीं थे बल्कि अरब के रुहानी मुर्दे थे।

अल्लाह और फ़रिश्ते आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद और सलाम भेजना

मौमेनीन को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेजने का हुक्म

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(अहज़ाब : 57)

अनुवाद : निसन्देह अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम भी उस पर दुरूद और ख़ूब-ख़ूब सलाम भेजो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपनी उम्मत को मूल्यवान उपदेश

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि सल्लम ने फ़रमाया : लोगों का हश्र उनकी नीयतों के अनुसार होगा (अर्थात अपनी अपनी नीयत के अनुसार वे अज्र पाएँगे)

★ عَنْ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا جُلُوْسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا نَظَرَ اِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ فَقَالَ اِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هٰذَا الْقَمَرَ لَا تُضَامُّوْنَ فِيْ رُؤْيَتِهٖ فَاِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَلَّا تُغْلَبُوْا عَلٰى صَلٰوةٍ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَصَلٰوةٍ قَبْلَ غُرُوْبِ الشَّمْسِ فَافْعَلُوْا ۔

(بخاری، کتاب التوحید والرد علی الجهمیة وغیرهم، باب قول الله وجوه یومئذٍ ناضرة الی ربها ناظرة)

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हम लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर थे, रात का समय था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चौदहवीं के चांद की तरफ़ देखा और फ़रमाया तुम अपने परवरदिगार को इसी तरह बिना रोक टोक देखोगे जिस तरह इस चौदहवीं के चांद को देख रहे हो। यदि तुम इस सौभाग्य को प्राप्त करने की कोशिश करना चाहते हो तो फ़ज्र और अस्र की नमाज़ वक़्त पर पढ़ने में देरी न होने दो।

★ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ لَا يَشْكُرِ النَّاسَ لَا يَشْكُرِ اللّٰهَ ۔

(ترمذی، باب مَا جاء فی الشکر لمن احسن الیك)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वह ख़ुदा का भी शुक्र अदा नहीं करता। अर्थात किसी व्यक्ति के एहसान के परिणाम में इन्सान को यदि कोई नेअमत या भलाई प्राप्त हो तो जहाँ अल्लाह तआला का शुक्र लाज़िम है वहां उस मुहसिन व्यक्ति का धन्यवाद अदा करना भी आवश्यक है।

★ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُلُّ اَمْرٍ ذِيْ بَالٍ لَا يُبْدَأُ فِيْهِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ فَهُوَ اَقْطَعُ

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हर वह काम जो बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम के बग़ैर शुरू किया जाए वह नाक़िस और बरकत से ख़ाली होता है।

★ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَثَلُ الَّذِيْ يَذْكُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِيْ لَا يَذْكُرُهٗ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ ۔ وَرَوَاهُ مُسْلِمٌ فَقَالَ مَثَلُ الْبَيْتِ الَّذِيْ يُذْكَرُ اللّٰهُ فِيْهِ وَالْبَيْتِ الَّذِيْ لَا يُذْكَرُ اللّٰهُ فِيْهِ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ۔

(بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل ذکر الله تعالیٰ)

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ज़िक्र-ए-इलाही करने वाले और ज़िक्र-ए-इलाही न करने वाले की मिसाल ज़िंदा और मुर्दा की तरह है अर्थात जो ज़िक्र-ए-इलाही करता है वह ज़िंदा है और जो नहीं करता वह मुर्दा है।

मुस्लिम की रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। वह घर जिन में ख़ुदा तआला का वर्णन होता है और वह घर जिनमें ख़ुदा तआला का वर्णन नहीं होता, उनकी मिसाल ज़िंदा और मुर्दा की तरह है।।

★ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: اَفْضَلُ الذِّكْرِ : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَفْضَلُ الدُّعَاءِ : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۔

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب دعوة المسلم مستجابة)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि बेहतरीन जप कलमा-ए-तौहीद (एकेश्वरवाद) है अर्थात इस बात का इक़रार करना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और बेहतरीन दुआ अलहमदो लिल्लाह है।

★ قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اَلَا اَدُلُّكَ عَلٰى كَنْزٍ مِنْ كُنُوْزِ الْجَنَّةِ ؟ فَقُلْتُ بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ! قَالَ : لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۔ (بخاری، کتاب الدعوات، باب قول لا حول ولا قوة الّا بالله)

हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। क्या मैं तुझे जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न बताऊं? मैंने निवेदन किया। हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ! मुझे अवश्य बताएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। लाहौल पढ़ा करो। अर्थात अल्लाह तआला की सहायता के बिना न मुझ में बुराईयों से बचने की ताक़त है और न नेकियों के करने की शक्ति।

عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ حَيِيٌّ كَرِيْمٌ يَسْتَحْيِيْ اِذَا رَفَعَ الرَّجُلُ اِلَيْهِ يَدَيْهِ اَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا خَائِبَتَيْنِ ۔

(ترمذی، کتاب الدعوات)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। अल्लाह तआला बड़ा लज्जा वाला, बड़ा करीम और दयालु है। जब बंदा उस के हुज़ूर अपने दोनों हाथ बुलन्द करता है तो वह उनको ख़ाली और नाकाम वापस करने से शर्माता है। अर्थात सच्चे दिल से मांगी हुई दुआ का वह रद्द नहीं करता बल्कि क़बूल फ़रमाता है।

★ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يَسْتَجِيْبَ اللّٰهُ لَهٗ عِنْدَ الشَّدَائِدِ وَالْكُرَبِ فَلْيُكْثِرِ الدُّعَاءَ فِي الرَّخَاءِ ۔ (ترمذی، ابواب الدعوات، باب دعوة المسلم مستجابة)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति यह चाहता है कि अल्लाह तआला तकालीफ़ के वक़्त उस की दुआओं को क़बूल करे तो उसे चाहिए कि आसानी और आराम के वक़्त अत्यधिक दुआ करे।

★ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا مِنْ اَحَدٍ يُسَلِّمُ عَلَيَّ اِلَّا رَدَّ اللّٰهُ عَلَيَّ رُوْحِيْ اَرُدُّ عَلَيْهِ السَّلَامَ ۔

(ابوداؤد، کتاب المناسك، باب زیارة القبور)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति भी मुझ पर सलाम भेजेगा उस का उत्तर देने के लिए अल्लाह तआला मेरी रूह को वापस लौटा देगा ताकि मैं उस के सलाम का उत्तर दे सकूँ। (अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर सलाम भेजने वाले को इस दुरूद का ऐसा बदला और सवाब मिलेगा जैसे स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सलाम-ओ-दुरूद का उत्तर प्रदान फ़र्मा हों)

★ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّمَا يُبْعَثُ النَّاسُ عَلٰى نِيَّاتِهِمْ ۔ (ابن ماجه،)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने समस्त संसार को एक अन्धकार में पाया और फिर आपके आने से वह अन्धकार नूर से बदल गया

जिस क़ौम में आप ज़ाहिर हुए आप फ़ौत नहीं हुए जब तक कि उस समस्त क़ौम ने शिर्क का चोला उतार कर तौहीद (एकेश्वरवाद) का जामा नहीं पहन लिया

(उपदेश हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

सय्यदना,मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमंनबिय्यीन व् खेरुलमुर्सेलीन

"हमारे धर्म का सार और सारांश यह है कि لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ - हमारा एतिक़ाद जो हम इस सांसारिक जीवन में रखते हैं जिस के साथ हम ख़ुदा तआला की असीम कृपा से इस संसार से विदा होंगे यह है कि सय्यदना,मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमंनबिय्यीन व् खेरुलमुर्सेलीन हैं।"

(इज़ाला औहाम हिस्सा प्रथम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 169)

उत्तम श्रेणी का जवाँ मर्द, ज़िंदा और ख़ुदा तआला के प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

"हम जब इन्साफ़ की दृष्टि से देखते हैं तो नुबुव्वत के सम्पूर्ण सिलसिले में से उच्चकोटि का बहादुर नबी और ख़ुदा का उच्चकोटि का प्रिय नबी केवल एक मर्द को जानते हैं अर्थात् वही नबियों का सरदार और रसूलों का गर्व, समस्त मुर्सलों का मुकुट जिसका नाम मुहम्मद मुस्तफ़ा व अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जिसके अनुकरण में दस दिन चलने से वह प्रकाश मिलता है जो इस से पूर्व हज़ार वर्ष तक नहीं मिल सकता था।"

(सिराज-ए-मुनीर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 12 पृष्ठ 82)

हमेशा का रूहानी जीवन वाला नबी तथा प्रताप एवं पवित्रता के तख़्त पर बैठने वाला नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

"हे समस्त वे लोगो जो पृथ्वी पर रहते हो! और हे वे समस्त इन्सानी रूहो जो पूरब और पश्चिम में आबाद हो! मैं पूरे ज़ोर के साथ आप को इस ओर बुलाता हूं कि **अब पृथ्वी पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है** और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो क़ुर्आन ने वर्णन किया है। और हमेशा का रूहानी जीवन वाला नबी तथा प्रताप एवं पवित्रता के तख़्त पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जिसके रूहानी जीवन और पवित्र प्रताप का हमें यह सबूत मिला है कि उसके अनुकरण और प्रेम से हम रूहुल क़ुदुस तथा ख़ुदा से वार्तालाप और आकाशीय निशानों के इनाम पाते हैं।"

(तिर्याक़ुल क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15 पृष्ठ 141)

समस्त संसार को हिदायत देने वाला नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

"हमारे नबी करीम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समस्त संसार के इन्सानों की रुहानी तर्बीयत के लिए आए थे इसलिए यह रंग हुज़ूर अलैहिस्सलाम में उत्तम श्रेणी की अंतिम सीमा तक मौजूद था और यही वह मर्तबा है जिस पर क़ुरआन-ए-करीम ने असंख्य स्थानों पर हुज़ूर की निसबत शहादत दी है और अल्लाह तआला की सिफ़ात के मुक़ाबिल और उसी रंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सिफ़ात का वर्णन फ़रमाया है। اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ(अम्बिया:108) और ऐसा ही फ़रमाया يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (अल् अराफ़ : 159) क़ुरआन शरीफ़ के दूसरे स्थानों पर ग़ौर करने से पता लगता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने उम्मी (अनपढ़) फ़रमाया है इस लिए कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कोई अध्यापक नहीं था परन्तु जबकि आप उम्मी (अनपढ़) थे क़ुरआन-ए-करीम को देखकर आश्चर्य होता है कि इसी उम्मी (अनपढ़) ने पुस्तक और हिक्मत ही नहीं बतलाई बल्कि अंतरात्मा के शुद्धिकरण के मार्गो से अवगत किय और यहां तक कि اَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ(अल् मुजादिला : 23) तक पहुंचा दिया। देखो और पूरे ध्यान की नज़र से देखो कि क़ुरआन शरीफ़ हर वर्ग के तालिब को अपने मतलूब तक पहुँचाता और हर रास्ती और सदाक़त के प्यासे को सेराब करता है लेकिन विचार तो करो कि यह हिक्मत और मार्फ़त का दरिया सदाक़त और नूर का चशमा किस पर नाज़िल हुआ? इसी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जो एक तरफ़ तो उम्मी (अनपढ़) कहलाता है और दूसरी तरफ़ वे चमत्कार और हक़ायक़ उसके मुँह से निकल रहे हैं कि संसार की तारीख़ में इस का उदाहरण पाया नहीं जाता।" (मलफ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 104 प्रकाशन 2018 क़ादियान)

समस्त संसार को अन्धकार से नूर की तरफ़ लाने वाला और तौहीद (एकेश्वरवाद) का जामा पहनाने वाला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

"हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चाई के प्रकट करने के लिए एक मुजद्दि-ए-अज़ाम (महा सुधारक) थे, जो लुप्त हो चुकी सच्चाई को दोबारा संसार में लाए। इस गर्व में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कोई भी नबी भागीदार नहीं क्योंकि आपने सारे संसार को एक अंधकार में पाया और फिर आप के प्रकट होने से वह अंधकार प्रकाश में बदल गया। जिस क़ौम में आप प्रकट हुए, आपकी मृत्यु न हुई, जब तक कि उस सारी क़ौम ने शिर्क (अनेकश्वरवाद) का चौला उतारकर ऐकेश्वरवाद का वस्त्र धारण न कर लिया तथा केवल इतना ही नहीं बल्कि वे लोग ईमान की श्रेष्ठ मर्तबा को पहुँच गए तथा सच्चाई और वफ़ा तथा विश्वास के ऐसे कार्य उनके द्वारा ज़ाहिर हुए कि जिसकी उदाहरण संसार के किसी भाग में नहीं पाई जाती। यह सफलता तथा इतनी बड़ी कामयाबी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा और अन्य किसी नबी को प्राप्त नहीं हुई। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत पर यही एक बड़ी दलील है कि आप एक ऐसे समय में प्रकट हुए अथवा तशरीफ़ लाए जबकि ज़माना अत्याधिक अंधकार में पड़ा हुआ था तथा स्वभाविक रूप से एक महान् मुसलेह (सुधारक) का इच्छुक था। फिर आप ऐसे समय में परलोक सिधारे जबकि लाखों लोग अनेकश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा को छोड़ कर एकेश्वरवाद तथा सीधे रास्ते को ग्रहण कर चुके थे। वास्तव में यह पूर्ण सुधार आप के साथ ही मख़्सूस (विशिष्ट) था कि आपने एक जंगली स्वभाव तथा पशु प्रकृति वाली क़ौम को मनुष्य के स्वभाव सिखाए। अथवा दूसरे शब्दों में इस तरह कहें कि पशुओं को इन्सान बनाया। और फिर इन्सानों से शिक्षित इन्सान फिर शिक्षित इन्सानों से बा ख़ुदा (ख़ुदा वाले) इन्सान बनाया, तथा रूहानियत की अवस्था उनमें पैदा कर दी तथा सच्चे ख़ुदा के साथ उनका सम्बन्ध पैदा कर दिया. ख़ुदा के रास्ता में बकरियों की तरह उनका वध किया गया तथा चूँटियों की तरह पैरों में कुचले गए परन्तु ईमान को हाथ से न छोड़ा बल्कि प्रत्येक मुसिबत में आगे क़दम बढ़ाया। अत: नि:सन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रूहानियत क़ायम करने के लिहाज से द्वितीय आदम थे, बल्कि वास्तविक आदम वही थे जिनके द्वारा तथा इसी कारण ही समस्त मानवीय सद गुण अपनी पूर्णता को पहुँचे

(लैक्चर स्यालकोट, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 20,पृष्ठ 206)

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उसवः के बारे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह सुनहरी शब्दों में लिखा जाने वाला वर्णन है कि ''كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰن''

नेक परिणाम उस वक़्त प्राप्त होंगे जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वास्तविक अनुसरण होगा

अन्यथा لَا اِلٰهَ اِلَّاالله का नारा भी खोखला है और مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ का नारा भी खोखला है

अल्लाह तआला ने तो फ़रमाया था قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللهُ अर्थात (कहो) यदि तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हो तो मेरा अनुसरण करो

अब इस अल्लाह तआला के प्रेम के और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुकरण के स्थान पर संसार की मुहब्बत को प्राथमिकता दी गई है क्या यही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुकरण है?

"मैं सच्च कहता हूँ कि कोई व्यक्ति हक़ीक़ी नेकी करने वाला और ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को पाने वाला नहीं ठहर सकता। जब तक कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इत्तेबाअ में खोया न जाए

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान स्थान और मर्तबे का निहायत बसीरत अफ़रोज़ आत्मा को संतुष्टि प्रदान करने वाला वर्णन।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के स्थान और मर्तबे और आपके उसवः पर आधारित हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बः जुमअः फ़र्मूदा 20 अक्तूबर 2017 सीरतुन्न नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) नंबर की मुनासबत से इस अंक में पाठकों के लिए प्रस्तुत है

तशह्हुद ताअव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

आज हम देखते हैं तो सब से अधिक फसाद मुस्लिम देशों में है मुसलमान गिरोहों में है। एक दूसरे की गर्दनें काटने पर सक्रिय हैं प्रत्येक ला इलाहा इल्लल्लाह तो पढ़ता है और दूसरे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ने वाले का ख़ून करता है। उसका अधिकार मारता है उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है। क्या यही कुरआन की शिक्षाएं हैं जिस पर ये लोग अनुकरण कर रहे हैं? क्या यही आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श है जिस का वे लोग अनुसरण कर रहे हैं? आजकल तो हम देखते हैं कि हर जगह दुनियादारी की प्रधानता है, अगर धर्म का नाम भी लेते हैं तो राजनीति को चमकाने के लिए और अपने विचार में अपनी सरकारें स्थापित करने या बचाने के लिए।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श के बारे में तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा का यह सुनेहरी अक्षरों में लिखा जाने वाला बयान है कि كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰن (मुस्नद अहमद बिन हंबल भाग 8 पृष्ठ 305 हदीस 25816 मसनद आयशा प्रकाशन आलेमुल कुतुब अल् इल्मिया बैरूत 1998 ई) कि आप की सीरत और आप के दिनचर्या का पता करना है तो कुरआन आप की सीरत है, इसे पढ़ें और ये उदाहरण आपके लिए निर्धारित किए हैं कि मोमिन आप को मानने वाले अनुकरण करें। केवल नारे लगाने वाले न हों। अल्लाह तआला ने भी यही कहा है कि मेरे से वास्तविक संबंध केवल ला इलाहा इल्लल्लाह कहने से स्थापित नहीं होगा बल्कि मेरे प्यार को प्राप्त करना है तो मेरे प्यारे रसूल का पालन करो उसके आदर्श को अपनाओ तो मेरे प्यारे बन जाओगे। तुम्हें वह स्थान मिलेगा जो कि ख़ुदा तआला के सानिध्य का स्थान है अन्यथा तुम्हारे नारे खोखले हैं। इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ''

(आले इम्रान 32)

कि तू कह दे कि अगर तुम अल्लाह तआला से प्रेम करते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तुम से प्यार करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और अल्लाह बख्शने वाला और बार बार क्षमा करने वाला है।

क्या ख़ुदा तआला जिस से मुहब्बत करे उस की यही अवस्था होती है जो आज कल के मुसलमानों की है उलमा जिन को साधारण मुसलमान प्राय अल्लाह तआला का प्यारा समझते हैं, उस के निकट समझते हैं, वे सब से अधिक दुनिया में फसाद पैदा कर रहे हैं। ख़ुद अब पाकिस्तान में तो कुछ समीक्षा करने वाले और कालम लिखने वाले और दूसरे माडिया पर भी कहने लग गए हैं कि मुसलमानों की यह अवस्था तथा कथित उलमा ने कर दी है। अतः इस समय मुसलमान उलमा की यह अवस्था इस बात का तकाज़ा करती है कि कि कोई कुरआन और सुन्नत का बताने वाला हो और वह अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार भेज दिया है परन्तु उलमा न ख़ुद उन की बात सुनना चाहता हैं न साधारण मुसलमानों को सुनने देते हैं बल्कि अल्लाह तआला की तरफ से आने वाले के ख़िलाफ कुफ्र के फत्वे दे कर एक समान्य भय और उपद्रव की सूरत पैदा कर दी है।

यह आरोप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर प्रत्येक दिन लगाया जाता है कि नऊज़ बिल्लाह दुनियावी इच्छाओं की पूर्ति और अपनी बढ़ाई के लिए जमाअत की स्थापना की है।

बहर हाल हम जानते हैं आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक थे और आप को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत की पूर्ति के लिए ही अल्लाह तआला ने भेजा था। हमें कुरआन का ज्ञान और अनुभूति आप से मिली है। आप हर अवसर पर कुरआन की शिक्षाओं के प्रकाश में हमें मार्गदर्शन करते हैं। अतः इस आयत اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللهُ को विभिन्न अवसरों पर विभिन्न भावों और अर्थों के साथ आप ने प्रस्तुत किया है और यही वह बातें हैं जो अल्लाह की प्रसन्नता दिलाकर उसका प्यारा बनाकर बुराईयों की स्थिति से निकालने वाली बन सकती हैं इसके अलावा कोई और रास्ता मुस्लिमों के लिए अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अपने देशों में शांति बनाए रखने के लिए इस्लाम के चमत्कारों को दुनिया पर दिखाने के लिए नहीं। अच्छे परिणाम उस समय स्थापित होंगे जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वास्तविक पालन होगा अन्यथा ला इलाहा इल्लल्लाह का नारा भी खोखला है और मुहम्मद रसूलुल्लाह का नारा भी खोखला है। इस समय, मैंने इस आयत के विस्तार में कुछ उद्धरण लिए हैं।

एक जगह आप फ़रमाते हैं कि :

"मुसलमानों में आंतरिक विभाजन का कारण भी यही दुनिया की मुहब्बत हुई है क्योंकि अगर केवल अल्लाह तआला की ख़ुशी सम्मुख होती तो आसानी से समझ आ सकता था कि अमुक समुदाय के नियम अधिक साफ हैं और उन्हें स्वीकार कर के एक हो जाओ, अब दुनिया से प्यार की वजह से यह ख़राबी पैदा हो रही है तो ऐसे लोगों को कैसे मुसलमान कहा जा सकता है जबकि उनका कदम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रस्ते पर नहीं। अल्लाह तआला ने तो फ़रमाया था कि اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ अर्थात (कहो) यदि तुम अल्लाह तआला से प्यार करते हो तो मेरा अनुकरण करो अल्लाह तआला तुम को अपना दोस्त रखेगा। आप फ़रमाते हैं कि "अब इस अल्लाह तआला की मुहब्बत के बजाय और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण कि बजाय, दुनिया की मुहब्बत को प्राथमिकता दीगई है। क्या यही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण में है? क्या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नऊज़ो बिल्लाह दुनियादारी थे? क्या वह (नऊज़ो बिल्लाह) सूद लिया करते थे या कर्तव्यों और खुदा के आदेशों के पालन में लापरवाही करते थे? क्या आप में मुआज़ अल्लाह पाखंड था, चापलूसी थी? दुनिया को धर्म पर प्राथमिकता देते थे। विचार करो अनुकरण तो यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कदमों पर चलो और फिर देखो कि अल्लाह तआला कैसे कैसे फज़ल करता है।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 348-349 प्रकाशन 1985 ई. यू.के)

लेकिन आजकल वस्तुत: जो मुसलमानों की स्थिति है और फिर अल्लाह तआला की जो कार्यात्मक गवाही इसके ख़िलाफ है वह इस बात की गवाह है कि उनका यह बुरा हाल हो रहा है देश-देश लड़ रहे हैं। ग़ैरों के पास जाकर हम मुस्लिम देश अन्य मुस्लिम देशों से लड़ने के लिए भीख मांगते हैं।

अब पिछले दिनों अमेरिका के राष्ट्रपति ने जो ईरान के ख़िलाफ फिर से प्रतिबंध लगाने के लिए एक घोषणा की और इसके ऊपर काम हो रहा है इस पर सारा यूरोप, यूरोपीय संघ अन्य देश इसके ख़िलाफ हैं और यहाँ इंग्लैंड में ये अंग्रेज़ कॉलम लिखने वाले ने लिखा कि अमेरिका के राष्ट्रपति की इस हरकत पर पूरी दुनिया के ख़िलाफ है, लेकिन केवल तीन देश हैं जो कहते हैं कि अमेरिका महान काम कर रहा है। एक तो संयुक्त राज्य अमेरिका ख़ुद ही है एक इज़रायल और एक सऊदी अरब है। अब सऊदी अरब ग़ैर-मुस्लिम देश को मुस्लिम देश के ख़िलाफ लड़ने की अनुमति दे रहा है, बल्कि इसका समर्थन कर रहा है। तो ये स्थिति मुसलमानों की है और इसी का नक्शा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खींचा है कि तुम लोग तो फटे हुए हो अल्लाह तआला के फज़लों को कैसे प्राप्त कर सकते हो।

इस बात को वर्णन करते हुए कि वास्तविक नेकी किस प्रकार प्राप्त कर सकते हो अल्लाह तआला की ख़ुशी को इंसान किस प्रकार प्राप्त कर सकता है। अल्लाह तआला के पुरस्कार से कैसे लाभान्वित हो सकता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह पुरस्कार कैसे मिले।? आप के ख़िलाफ यह फतवे दिए जाते हैं कि नऊज़ो बिल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा से दूर हटने वाले हैं। आप इस्लाम की शिक्षा से ही विचलित करने वाले हैं।

आप फ़रमाते हैं कि

"मैं सच कहता हूँ (और अपने अनुभव से कहता हूँ) कि कोई व्यक्ति वास्तविक भलाई करने वाला और अल्लाह तआला की ख़ुशी को पाने वाला नहीं ठहर सकता और उनके पुरस्कार और बरकतों और मआरिफ़ और तथ्य और कशूफ़ से लाभांवित नहीं होते हैं जो उच्च स्तर की आत्म की शुद्धि पर मिलते हैं।" (उच्च स्तर की आत्म शुद्धि जो होती है एक स्थान पर आदमी पहुंचता है तभी अल्लाह तआला के पुरस्कार और आशीर्वाद मिलते हैं कशूफ़ होते हैं अल्लाह तआला का संवाद होता है। फ़रमाया कि) "जब तक वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण में खो न जाए और इसका सबूत ख़ुद अल्लाह तआला के शब्दों से मिलता है कि اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ और अल्लाह तआला के इस दावे की व्यावहारिक और ज़िन्दा दलील आप फ़रमाते हैं कि मैं हूँ।

(मल् फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 204 प्रकाशन 1985 ई. यू.के)

इस समय में मुझ से अल्लाह तआला बातें करता है कि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती में खोया गया और आप का अनुकरण किया। और अल्लाह तआला ने फिर मुहब्बत का व्यवहार किया।

अत: आप पर इलज़ाम लगाने वालों के आरोप कि आप ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान को गिराया है। जब कि आप तो फ़रमा रहे हैं कि जो स्थान मुझे मिला है वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत और प्रेम और आप के संपूर्ण पालन के माध्यम से मिला। जिसे दुनिया आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान गिराने वाला समझती है वही वास्तविक सच्चा प्रेमी है जिसने वास्तविक पालन किया और फिर अल्लाह तआला ने भी ऐसा सम्मानित कि अपने हबीब से प्यार की वजह से अपना भी प्रिय बना लिया।

इस पूर्ण पालन के परिणाम में अल्लाह तआला ने आप को जो काम सौंपा इसके बारे में आप फ़रमाते हैं कि :

"मुझे भेजा गया है ताकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खोई हुई गरिमा को फिर स्थापित करूं और कुरआन शरीफ की सच्चाइयों को दुनिया को दिखाओं और यह सब काम हो रहा है, लेकिन जिनकी आंखों पर पट्टी बंधी हैं, वे इसे नहीं देख सकते।

(मल् फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 14 प्रकाशन 1985 ई. यू.के)

फिर एक जगह इस आयत की तफसीर करते हुए आप फ़रमाते कि "उन्हें कह दो कि तुम अगर चाहते हो कि महबूब इलाही बन जाओ और तुम्हारे गुनाह क्षमा कर दिए जाएं तो इसका एक ही रास्ता है कि मेरी आज्ञा का पालन करो।" (यह जो आयत है इस का अनुवाद है।) आप फ़रमाते हैं कि "क्या मतलब कि मेरा अनुकरण एक ऐसी चीज़ है जो अल्लाह तआला की रहमत से निराश नहीं होने देती गुनाहों की माफी का कारण होती है और अल्लाह तआला का प्रिय बना देती है।" (आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन जो है वह गुनाहों की माफी का कारण बनता है और न सिर्फ यह बल्कि अल्लाह तआला का प्रिय बना देती है।) आप फ़रमाते हैं कि "और तुम्हारा यह दावा कि हम अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हैं तभी सच्चा और सही साबित होगा कि तुम मेरा अनुकरण करो।" (अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन करो।) फ़रमाते हैं कि "इस आयत से साफ पता चलता है कि व्यक्ति अपनी किसी बनाई हुई साधना शैली और श्रम और जप तप से अल्लाह तआला का प्यारा और इलाही रहमत का हकदार नहीं बन सकता। इलाही अनवार और बरकतें किसी पर नाज़िल नहीं हो सकतीं जब तक वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारिता में खोया न हो और जो व्यक्ति आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रेम में खो जाए और आप की आज्ञाकारिता और पालन में सभी प्रकार की मौत अपनी जान पर वारिद कर ले उसे वह ईमान का नूर मुहब्बत और प्रेम दिया जाता है जो अल्लाह के अतिरिक्त उपस्यों से मुक्त कर देता

है और गुनाहों से माफी और मोक्ष का कारण होता है। इस दुनिया में वह एक शुद्ध जीवन पाता है और नफसानी जोश तथा भावनाओं की अंधेरी कब्रों से हटा दिया जाता है। इसी की तरफ यह हदीस इशारा करती है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि اَنَا الْحَاشِرُ الَّذِیْ یُحْشَرُ النَّاسُ عَلٰی قَدَمِیْ अर्थात मैं उन मुर्दों को उठाने वाला हूँ जिनके कदमों पर वह लोग उठाए जाते हैं।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 183 प्रकाशन 1985 ई. यू.के)

रूहानी मुर्दों को ज़िन्दा करने वाले हैं। आप के पीछे चलने वाले हैं अल्लाह तआला का महबूब बनने वाले हैं।

फिर एक स्थान पर आप इसको स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि

"महान नेकी की प्राप्ति के लिए अल्लाह तआला ने एक ही रास्ता रखा है कि रसूसुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन किया जाए जैसा कि इस आयत में स्पष्ट फ़रमा दिया है اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ आओ, मेरा अनुकरण करो ताकि अल्लाह भी तुम्हें दोस्त रखे। इसका अर्थ यह नहीं है कि रस्मी तौर पर इबादत करो। अगर वास्तविक धर्म यही है तो फिर नमाज़ क्या है और रोज़ा क्या चीज़ है ख़ुद ही एक बात से रुके और ख़ुद ही कर ले।" (औपचारिक नमाज़ें नहीं हैं। नमाज़ें ऐसे अदा करो जो उनका अधिकार है जो उनके समय हैं उनकी पाबन्दी करनी ज़रूरी है और फिर इस तरह इबादत करो कि अल्लाह तआला के सामने खड़े हुए हो अन्यथा यह सारी औपचारिक इबादतें हैं।) फ़रमाया कि "इस्लाम केवल इस का नाम नहीं है इस्लाम तो यह है कि बकरे की तरह सिर रख दे जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा मरना मेरा जीना मेरी नमाज़ मेरी क़ुरबानियां अल्लाह तआला के लिए हैं और सबसे पहले मैं अपनी गर्दन रखता हूं।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 186 प्रकाशन 1985 ई. यू.के)

अत: वास्तविक पालन करने वाले अपनी इबादतों की भी गुणवत्ता बुलंद करते हैं तो हम में से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि इस लिहाज़ से भी हमें भी ज़रूरत है अन्यथा हमारा भी पालन का दावा खोखला दावा है।

फिर आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पूर्ण तौहीद वाला होने के बारे में फ़रमाते हैं कि

"हे रसूल तुम उन लोगों से कह दो कि अगर तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो।" (यह आयत का अनुवाद है।) फ़रमाया कि "अल्लाह तआला तुम को अपना प्रिय बना लेगा।" फ़रमाते हैं कि "आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूर्ण अनुसरण आदमी को अल्लाह तआला के महबूब के स्थान तक पहुंचा देता है। जिससे पता चलता है कि आप पूर्ण तौहीद का उदाहरण थे। (मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 115 प्रकाशन 1985 ई यू. के) अर्थात अब आप इस से यह बता रहे हैं, दलील दे रहे हैं कि आप पूर्ण तौहीद के मानने वाले थे। उस स्थान पर पहुंचे हुए थे, जहां कोई भी नहीं पहुंच सका। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने आपको दूसरों के लिए इबादत के लिहाज़ से भी उदाहरण बनाया।

एक जगह आप फ़रमाते हैं कि

"अल्लाह की मुहब्बत पूर्ण रूप में मनुष्य अपने अंदर पैदा नहीं कर सकता जब तक आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण और व्यवहार को अपना रहबर और हादी न बना ले। अल्लाह ने ख़ुद इस बारे में फ़रमाया है, اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ। अर्थात अल्लाह तआला का महबूब बनने के लिए ज़रूरी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया जाए। सच्चा अनुकरण आप के उच्च आदर्श का रंग अपने अन्दर पैदा करना होता है।" (मल् फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 87 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: एक तो इबादत के रंग हैं एक उच्च आचरण के रंग हैं और सच्चे अनुसरण का मतलब ही यही है कि जो उच्च आचरण हैं जिनका कुरआन में उल्लेख है वह उनमें पैदा किए जाएं जैसा कि पहले उल्लेख हो चुका है हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि काना क़ुलकुहो अल्कुरआन कि आप के उच्च आचरण अगर देखने हैं तो कुरआन करीम पढ़ लो पढ़ो, वही इसकी तफसीर है इसलिए इस संबंध में, हमें कुरआन को पढ़ने की ज़रूरत है। हमें दूसरों को कहने से पहले अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर हम ने किस हद तक क़ुरआन को अपना नियमावली बनाया है यह बैअत का भी हिस्सा है। सच्चाई को हमने कितना स्थापित किया है। न्याय को किस सीमा तक हम ने स्थापित किया है? लोगों के अधिकारों को देने में हम किस सीमा तक कोशिश करने वाले हैं।

फिर एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"प्रत्येक व्यक्ति को अपने आप ख़ुदा तआला से मिलने की शक्ति नहीं है उसके लिए वास्ता ज़रूरी होगा और वह वास्ता कुरआन शरीफ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। इसलिए इस वास्ता को जो छोड़ता है वह कभी भी सफल नहीं होगा। इंसान तो दरअसल बन्दा अर्थात ग़ुलाम है और ग़ुलाम का काम यह है कि मालिक जो आदेश करे उसे स्वीकार करे इसी तरह अगर तुम चाहते हो कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकतें प्राप्त करो तो ज़रूर है कि उसके ग़ुलाम हो जाओ। कुरआन में ख़ुदा तआला फ़रमाता है قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓی اَنْفُسِهِمْ (अर्थात कह दो कि हे मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया।) फ़रमाया कि "इस जगह बन्दों से अभिप्राय ग़ुलाम हैं न कि प्राणी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बन्दा होने के लिए आवश्यक है कि आप पर दरूद पढ़ो और आप के किसी भी आदेश की नाफ़रमानी न करो। और सब आज्ञाओं का पालन करो जैसा कि आदेश है। اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ यानी अगर तुम ख़ुदा तआला से प्यार करना चाहते हो तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पूरे आज्ञाकारी बन जाओ और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रास्ते में फ़ना हो जाओ तब ख़ुदा तुम से मुहब्बत करेगा।

(मलुफूज़ात भाग 5 पृष्ठ 321-322 प्रकाशन 1985 ई. यू. के)

अत: बहुत गुनाहगार भी और इस्तिग़फार करने वाला अगर हकीकत में अपने आप में परिवर्तन पैदा करना चाहे तो ख़ुदा तआला का प्यारा बन सकता है

फिर आप फ़रमाते हैं कि

"अल्लाह तआला को प्रसन्न करने का एक यही तरीका है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूर्णता अनुकरण किया जाए। देखा जाता है कि लोग तरह तरह कि रस्मों में गिरफतार हैं। कोई मर जाता है तो विभिन्न प्रकार की बिदअतें और अनुष्ठान किए जाते हैं, हालांकि चाहिए कि मुर्दे के हक़ में दुआ करें। अनुष्ठानों के करने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का केवल विरोध ही नहीं है बल्कि उनकी उपेक्षा भी की जाती है।" (जो नई नई रस्में पैदा कर ली हैं ये केवल आपके आदेश का उल्लंघन ही नहीं है, बल्कि एक प्रकार से आप का अपमान है अब जिन्होंने रसूल के अपमान के कानून पास किए हुए हैं, वे सब से बढ़ कर इन बिदअतों में शामिल हैं। यह अपमान कैसे किया जाता है।?) आप फ़रमाते हैं ..... "मानो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पर्याप्त नहीं समझा जाता और अगर पर्याप्त विचार

करते हैं तो अपनी ओर से रस्मों के बनाने की क्या ज़रूरत पड़ती।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 440 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

इसलिए, उन लोगों को जो हमारे ख़िलाफ कुफ्र के फ़तवे देते हैं अपनी गर्दनों में झांकने की आवश्यकता है।

एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि

"यदि तुम अल्लाह तआला से प्यार करते हो तो मेरा अनुसरण करो। इस अनुसरण का परिणाम यह होगा कि अल्लाह तआला तुम से प्यार करेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख्श देगा।" आप फ़रमाते हैं "अत: अब इस आयत से साफ साबित होता है कि जब तक मनुष्य पूर्ण आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण करने वाला नहीं होता। वह अल्लाह तआला की बरकतें और फैज़ पा नहीं सकता और वह अनुभूति और अंतर्दृष्टि जो गुनाह भरे जीवन और नफसानी आग की भावनाओं को ठंडा कर दे प्रदान नहीं होती। ऐसे ही लोग हैं जो उलमाओ उम्मती के अर्थ में दाख़िल हैं।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 96-97 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

यदि नफ्सानी भावनाओं को शांत करना है तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण पैरवी की जानी चाहिए। आपके आदर्श पर चलने की ज़रूरत है। वास्तविक ज्ञान और अंतर्दृष्टि अल्लाह तआला की प्राप्त करनी होगी उसका महबूब बनना है तो उस की पैरवी करने की ज़रूरत है। गुनाह भरे जीवन से मुक्ति पानी है तो आप का पालन करने की ज़रूरत है और जो लोग ऐसा करते हैं वे उस स्थान पर पहुँच जाते हैं जिनके बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राएल के नबियों की तरह हैं।"

(अल्मूज़ूआत कबीर मुल्लाह अली कारी पृष्ठ 159 हदीस 614 प्रकाशन कदीमी कुतुब खाना, आराम बाग़, कराची)

लेकिन आजकल के उलमा इसमें शामिल नहीं हैं। यह वह स्थान पाने वाले नहीं क्योंकि यह तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जारी फ़ैज़ के मानने वाले नहीं हैं। यह समझते ही नहीं कि इस से फैज़ मिल सकता है।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान के बारे में आप फ़रमाते हैं कि

"आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सबसे बड़ा स्थान तो यह था कि आप महबूब-ए- इलाही थे लेकिन अल्लाह ने दूसरे लोगों को भी इस स्थान पर पहुंचने की राह बताई जैसा कि फ़रमाया اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ यानी उनसे कह दो, यदि तुम चाहते हो कि अल्लाह कि महबूब बन जाओ तो मेरा अनुसरण करो और अल्लाह तआला तुम को अपना महबूब बना लेगा।" (आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह घोषणा करवाई।) फ़रमाते हैं कि "अब विचार करो कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूर्ण अनुसरण महबूब इलाही तो बना देता है तो और क्या चाहिए।?"

(मल् फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 65 प्रकाशन 1985 ई. यू.के)

फिर एक जगह आप फ़रमाते हैं कि :

"जो व्यक्ति यह कहता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना मुक्ति हो सकती है वह झूठा है। अल्लाह तआला ने जो बात हमें समझाई है वह बिलकुल इस के विरुद्ध है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ कि हे रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) उन लोगों से कह दे कि अगर तुम ख़ुदा तआला से प्यार करते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो। तुम ख़ुदा तआला के प्रिय बन जाओगे। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना कोई व्यक्ति भी मुक्ति नहीं पा सकता। जो लोग आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ द्वेष रखते हैं उनके लिए कभी भलाई नहीं।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 434-435 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

यह है हमारे ईमान का हिस्सा

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान के बारे में एक ईसाई से बहस हो रही थी सवाल जवाब हो रहे थे। इस ईसाई ने कहा कि ईसा अलैहिस्सलाम के स्थान के बारे में कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने बारे में यह कहते हैं। उन्होंने यह कहा है कि "मेरे पास आओ जो तुम थके और निढाल को मैं आराम दूंगा।" और यह (भी कहा ईसा अलैहिस्सलाम ने) कि "मैं नूर हूँ और मैं राह हूं। मैं जीवन और सच्चाई हूँ।" (अर्थात मैं नूर हूं, मैं रास्ता दिखाने वाला हूँ, मैं जीवन देने वाला हूँ, मेरे पास आओ। तो ईसाई ने प्रश्न किया कि) "क्या इस्लाम धर्म के संस्थापक (यानी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने यह शब्द या ऐसे शब्द किसी जगह अपनी ओर सम्बंधित किए हैं।"? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसके जवाब में फ़रमाया कि "कुरआन शरीफ में साफ कहा गया है कि اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ अर्थात उनसे कह दो, कि अगर तुम ख़ुदा से मुहब्बत रखते हो तो आओ, मेरा अनुकरण करो ताकि ख़ुदा तआला भी तुम से प्यार करे और तुम्हारे गुनाहों को माफ कर दे।" फ़रमाया कि "यह वादा कि मेरे अनुसरण से मनुष्य ख़ुदा का प्यारा बन जाता है मसीह की पिछली बातों से बढ़ कर है क्योंकि इससे बढ़कर कोई स्थान नहीं है कि आदमी ख़ुदा का प्यारा हो जाए। (मसीह ने तो कहा था कि रोशनी पाओ। अल्लाह तआला ने यहां आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाया कि तुम घोषणा करो कि जो मेरे पीछे आएगा वह अल्लाह तआला का प्रिय बन जाएगा और गुनाह भी बख़्शे जाएंगे।) फ़रमाते हैं कि "अत: जिस की राह पर चलना इंसान को अल्लाह तआला का महबूब बना देता उस से अधिक किसका अधिकार है कि अपने आप को रोशनी के नाम से सम्बोधित करे।"

(सीराजुद्दीन इसाई के चार सवालों के जवाब रूहानी खज़ायन भाग 12 पृष्ठ 372)

यह वह समय था जब हर तरफ ईसाई पादरी ईसाइयत का प्रचार कर रहे थे भारत में लाखों मुसलमान ईसाई हो चुके थे। मुसलमान उलेमा और अन्य नेताओं को ताकत नहीं थी कि इस्लाम की रक्षा कर सकें और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और शान को ऐसे रंग में बताएं कि ग़ैर मुस्लिमों के मुंह बंद हो सकें। ऐसे समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनका मुकाबला किया आप ही थे जिन्हें अल्लाह तआला ने इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान दुनिया के सामने पेश करने के लिए भेजा था और फिर भारत का इतिहास गवाह है कि ईसाई पादरियों के इस्लाम पर हमले को अल्लाह तआला के इस पहलवान ने, इस अल्लाह के वीर ने तर्कों और दलीलों से रोका। और न केवल रोका बल्कि पीछे हटाया और इस बात का स्पष्ट रूप से उस समय के मुसलमानों ने इकरार किया था। तारीख़ में हमें मिलता है बल्कि इस ज़मानें के उलमा जो हमारे विरोधी हैं उन्होंने भी यह स्वीकार किया कि कुछ साल पहले डॉ इसासर अहमद की मृत्यु हो गई है इस बात को स्वीकार किया था कि उस ज़माने में वास्तव में इस्लाम की रक्षा हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने ही की थी। बहरहाल यह एक तथ्य है कि जिस तरह आप ने इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान को ऊंचा किया किसी और मुसलमान आलिम को इसकी ताकत नहीं मिली।

फिर कुल इनकुनुम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का सुंदर तर्क आप ने प्रस्तुत किया। अरबों में, विशेष रूप से हज़रत ईसा

अलैहिस्सलाम को अभी भी आसमान पर समझा जाता है और यह उन का बड़ा दृढ़ विश्वास है बहरहाल इस का खण्डन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि

"मेरे नज़दीक मोमिन वही होता है जो आपका अनुकरण करता है और वही किसी स्थान पर पहुंचता है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमया है, اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ अर्थात कह दो कि अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तआला तुम्हें अपना महबूब बना ले।" आप फ़रमाते हैं कि

अब मुहब्बत का ताकज़ा तो यह है कि महबूब के कर्म के साथ विशेष प्रेम हो।"(विशेष मुहब्बत हो एक सम्बन्ध हो।) आप फ़रमाते हैं कि" आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।"(अर्थात आप की वफात हुई) आप ने मर कर दिखा दिया फिर कौन है जो ज़िन्दा रहे या ज़िन्दा रहने की इच्छा करे? या किसी और के लिए सोचे के वे जावित रहे? (अगर कोई वास्तविक तौर पर आप का मानने वाला है तो वह ज़िन्दा रह सकता है और न कोई इच्छा करेगा और नही उसको किसी और के जीवित रहने के दृष्टिकोण पर विश्वास रखना चाहिए।) आप फ़रमाते हैं कि "मुहब्बत का तकाज़ा तो यही है कि आप के अनुसरण में ऐसा गुम हो कि अपने नफ्स की भवनाओं को थाम ले और यह सोच ले कि मैं किस की उम्मत हूं। ऐसी अवस्था में जो व्यक्ति हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में यह आस्था रखता है कि वह अब तक ज़िन्दा हैं वह क्योंकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और अनुसरण का दावा कर सकता है? इसलिए आप के बार में वह बर्दाशत कर लेता है कि मसीह को अफ़ज़ल करार दिया जाए और आप को मुर्दा कहा जाए। परन्तु उस के लिए वह पसन्द करता है कि वह ज़िन्दा विश्वास किया जाए।"

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 228-229 प्रकाशन 1985 ई. यू. के)

एक तरफ तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम और आप के अनुकरण का दावा है दूसरी तरफ यह कहकर कि मसीह जीवित है उसे बेहतर करार दिया जा रहा है।

तो आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं जिन्होंने हर लिहाज़ से इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बचाव किया है और आप की शान को उंचा किया है और यही आपकी बेसत का उद्देश्य था जिस पर उलेमा का हर समय आरोप रहता है।

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि जीवित नबी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं, आप फ़रमाते हैं :

"विचार कर के देखो कि जब यह लोग कुरआन और सुन्नत के ख़िलाफ कहते हैं कि ईसा जीवित आसमान पर बैठे हैं पादरियों को आलोचना का मौका मिलता है और वह चटपट कह उठते हैं कि तुम्हारा पैग़म्बर मर गया और मुआज़ अल्लाह ज़मीनी है" (और यही कुछ टीवी चैनलों पर होता रहा है, जिस पर अरब दुनिया में बड़ी बेचैनी पैदा होती रही है। अन्त में जब हमारी दलीलें सुनीं, हव्वारुल मुबाशिर के प्रोग्राम एम.टी.ए अरबी के कार्यक्रम सुने, तब कई लोगों ने इसे पसन्द किया और इन तर्कों के कायल हुए लेकिन उल्मा फिर भी राजी नहीं हो रहे।) आप फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा जीवित और आसमानी है, और इस के साथ ही आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपमानित कर के कहते हैं वह मुर्दा है। यही इन का प्रोपेगन्डा होता रहा है) आप फ़रमाते हैं कि "सोच कर बताओ कि वह रसूल जो सब रसूलों से अफ्ज़ल और ख़ातमुल अंबिया है ऐसी आस्था कर के उस के सम्मान और ख़ातमियत को ये लोग दाग़ नहीं लगाते? ज़रूर लगाते हैं और ख़ुद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान करते हैं।" आप फ़रमाते हैं कि "मैं विश्वास रखता हूं कि पादरियों से जितना अपमान इन लोगों ने इस्लाम का करवाया है।" (अर्थात उन मुसलमानों ने जो यह आस्था रखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सालम ज़िन्दा हैं) "और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुर्दा कहलाया है। इस की सज़ा में यह अप-शगुन और बुरी किस्मत इन के साथ शामिल हो रही है।" (मुसलमानों का जो यह हाल है यह इसी कारण से है।) आप फ़रमाते हैं कि "एक तरफ तो मुंह से कहते हैं कि वह रब रसूलों से अपज़ल हैं।" (अर्थात आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सब रूसूलों से अफ्ज़ल हैं) "और दूसरी तरफ इकरार कर लेते हैं कि 63 साल के बाद मर गए और मसीह अब तक ज़िन्दा है और नहीं मरा। हालांकि अल्लाह तआला आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाता है وَكَانَ فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكَ عَظِيۡمًا कि अल्लाह तआला का तुझ पर बहुत बड़ा फज़ल है) फिर क्या यह अल्लाह तआला का आदेश ग़लत है।? फ़रमाते हैं "नहीं। यह बिल्कुल ठीक है और सही है और झूठे हैं जो कहते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुर्दा हैं। इससे बढ़कर कोई कलमा अपमान का नहीं हो सकता। वास्तविकता यही है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में ऐसी फज़ीलत है जो किसी नबी में नहीं है। मैं उसे प्यार करता हूं कि जो व्यक्ति आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी वर्णन नहीं करता है, मेरे निकट वह एक काफिर है।" आप फ़रमाते हैं "कितने अफसोस की बात है कि जिस नबी की उम्मत कहलाते हैं उसी को मुआज़ अल्लाह मुर्दा कहते हैं और उस नबी जिस की समाप्ति की ضُرِبَتۡ عَلَيۡهِمُ الذِّلَّةُ وَالۡمَسۡكَنَةُ पर हुई हो" (अर्थात उन पर अपमान और दरिद्रता की मार डाली गई थी।)"उसे जिन्दा कहा जाता है।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 28-29 प्रकाशन 1985 ई. यू. के)

इस बात का वर्णन करने के बाद कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहले कोई जो नबी आ चुके वह अब कोई नहीं आ सकता। अब न ईसा अलैहिस्सलाम आ सकते हैं वह तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम के नबी थे वह मर गए और कोई भी नबी अब नहीं आ सकता है। फिर आप बयान फ़रमाते हैं कि यह फ़ैज़ अब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से और आपका अनुसरण से ही जारी हो सकता है और हुआ है क्योंकि आप, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही जीवित नबी हैं।

इसलिए इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन में अल्लाह तआला ने आप को मसीह मौऊद और महदी मौऊद बनाकर भेजा है जिस का स्तर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधीन नबी का और ग़ैर शरई नबी का है। अत: आप फ़रमाते हैं कि

"मैंने केवल ख़ुदा तआला की कृपा से न अपने किसी कौशल से इस नेअमत से पूर्ण भाग पाया जो मुझसे पहले नबियों और रसूलों और ख़ुदा तआला के चुने हुओं को दी गई थी और मेरे लिए इस नेअमत का पाना संभव न था अगर मैं अपने सय्यद व मौला अंबिया के फ़ख़र ख़ैरुल वरा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मार्ग का पालन न करता। अत: मैंने जो कुछ पाया उस अनुसरण से पाया और मैं अपने सच्चे और पूर्ण ज्ञान से जानता हूँ कि कोई व्यक्ति सिवाय इस नबी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन के अल्लाह तआला तक नहीं पहुंच सकता और न पूर्ण अनुभूति का हिस्सा पा सकता है और इस जगह यह भी बताता हूँ कि वह क्या बात है कि सच्चा और पूर्ण अनुसरण आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सब बातों से पहले दिल में पैदा होता है अत: याद रहे कि वह सलीम दिल है अर्थात दिल से दुनिया का प्रेम निकल जाता है और दिल एक अनन्त और आन्नद का इच्छुक हो जाता है। फिर इस के बाद एक शुद्ध और कामिल अल्लाह तआला की मुहब्बत इस सलीम दिल के कारण पैदा होती है।(जब

दुनिया की मुहब्बत निकली जाती है तो फिर मुहब्बते इलाही प्राप्त होती है) "और यह सब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन से बतौर विरासत मिलती हैं जैसा कि अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाता है اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ उन्हें कह दे कि अगर तुम ख़ुदा तआला से प्यार करते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि ख़ुदा तआला भी तुम से प्यार करे बल्कि एक तरफा प्यार का दावा बिल्कुल झूठ और बकवास है। जब इंसान सच्चे रूप से अल्लाह तआला से मुहब्बत करता है तो ख़ुदा तआला भी उस से मुहब्बत करता है तब धरती पर उसके लिए एक स्वीकृति फैलाई जाती है और हज़ारों मनुष्यों के मन में एक सच्चा प्यार उस का डाल दिया जाता है और एक अवशोषित करने वाली शक्ति उस को प्रदान की जाती है और एक नूर उसे दिया जाता है जो हमेशा उसके साथ होता है।"

(इसलिए यही देख लें अब दूर-दराज़ बैठे अफ़्रीकी देशों में भी यह प्यार अल्लाह तआला डालता है जहां लाखों लोग अहमदियत में शामिल हो रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मान रहे हैं।) आप फ़रमाते हैं "जब एक इंसान सच्चे दिल से ख़ुदा तआला से प्यार करता है और दुनिया पर इसे प्राथमिकता देता है और अल्लाह तआला की महानता और गरिमा उसके दिल में बाकी नहीं रहती बल्कि सबको एक मरे हुए कीड़े भी बदतर समझता है तब ख़ुदा तआला जो उसके दिल को देखता है एक भारी तजल्ली के साथ उस पर नाज़िल होता है और जिस तरह एक साफ आइना में जो सूर्य के मुकाबला में रखा गया है सूर्य का प्रतिबिम्ब ऐसे पूरे रूप में पड़ता है कि अधिकृत और रूपक के रूप में कह सकते हैं कि वही आफताब जो आसमान में है आईना में भी मौजूद है ऐसा ही ख़ुदा तआला ऐसे दिल में उतरता है और उसके दिल को अपना सिंहासन बना लेता है। यही वह बात है जिसके लिए इंसान बनाया गया है।

(हकीकुतल वह्यी रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 64-65)

अत: आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पूर्ण आशिक और आप का अनुसरण करने वाले थे जिसकी वजह से अल्लाह तआला ने आप से प्रेम किया और मसीह मौऊद और महदी मौऊद और नबी के अधीन होने का सम्मान दिया।

अल्लाह तआला हमें आप को मानने के बाद इसका सम्मान करने की भी तौफ़ीक प्रदान करे और हमें भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का परिपूर्ण पालन करने वाला बनाए। हमें प्रत्येक को अपनी अपनी शक्तियों और क्षमताओं के अनुसार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलने और आप का पालन करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे और मुसलमानों को भी ताकत दे कि वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस सच्चे आशिक को पहचानने वाले और मानने वाले बनें।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 15 का शेष

जाग उठी और शिर्क के नारे को बर्दाश्त नहीं कर सके। आपने स्वयं मुस्लमानों से फ़रमाया कि उत्तर क्यों नहीं देते सहाबा ने अर्ज़ किया हुज़ूर क्या उत्तर दें? फ़रमाया कहो '' اللہ اعلیٰ و اجل '' कि अल्लाह की शान बुलंद और बाला है।

जंग-ए-बदर के अवसर पर एक मुशरिक ने कहा कि यदि आप मुझ को माल-ए-ग़नीमत में से कुछ हिस्सा देंगे तो मैं आपके साथ सहायता के लिए चल सकता हूँ। आपने फ़रमाया क्या तुम मुस्लमान होने के लिए तैयार हो उसने कहा मुस्लमान होने के लिए तैयार नहीं हूँ। इस पर आप ने फ़रमाया कि मैं किसी मुशरिक की सहायता नहीं ले सकता। तौहीद (एकेश्वरवाद) की महानता प्रकट करने और तौहीद (एकेश्वरवाद) के नारे लगाने के ये नज़्ज़ारे संसार ने मक्का विजय के अवसर पर भी देखे कि उस फ़तह की ख़ुशी में अल्लाह के सम्मान और शान के प्रकट में आपका सिर ऊंटनी के पालान तक झुक गया और दूसरी तरफ़ आपने: جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا का नारा लगाया।

तौहीद (एकेश्वरवाद) की यही मुहब्बत आपने सहाबा किराम में भी पैदा फ़र्मा दी थी इसलिए एक अन्सारी सहाबी जो मस्जिद क़ुबा में नमाज़ पढ़ाते थे उनके सम्बन्ध में रिवायत है कि वह हर जहरी (जिस नमाज़ में ऊँची आवाज़ से तिलावत की जाती है) नमाज़ में केवल सूरत इख़लास अर्थात قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ते थे इस का वर्णन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किया तो उस सहाबी ने अर्ज़ किया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह सूरत अल्लाह तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) पर अधारित है इस लिए यह मुझे बहुत पसन्द है। हुज़ूर ने फ़रमाया इस सूरत से मुहब्बत तुम्हारे लिए जन्नत में जाने का रास्ता साफ़ कर देगी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समस्त आयु अल्लाह तआला की अज़मत शान और वहदानियत का दरस देते रहे और देहांत के समय भी आपकी ज़बान मुबारक पर प्रिय शब्द थे لَعَنَ اللّٰهُ الْيَهُوْدَ وَالنَّصَارٰى اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ اَنْبِيَاءِهِمْ مَسْجِدًا (بخاری) अल्लाह तआला यहूद और ईसाईयों पर लानत करे कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दा-गाह बना लिया और अपने सम्बन्ध में दुआ की कि اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ قَبْرِيْ وَثَنًا يُعْبَدُ हे अल्लाह मेरी क़ब्र को बुत परस्ती की जगह न बनाना।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्ची पैरवी के परिणाम में ख़ुदा के प्रेम के हुसूल के सम्बन्ध में फ़रमाते हैं :

मेरा यह ज़ाती अनुभव है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चे दिल से पैरवी करना और आपसे मुहब्बत रखना इन्सान को ख़ुदा का प्यारा बना देता है। इस तरह पर कि स्वयं उसके दिल में मुहब्बत इलाही की एक सोज़िश पैदा कर देता है। तब ऐसा व्यक्ति हर एक वस्तु से दिल बर्दाश्ता (विमुख) हो कर ख़ुदा की तरफ़ झुक जाता है और उस का प्रेम और शौक़ केवल ख़ुदा तआला से बाक़ी रह जाता है तब मुहब्बत-ए-इलाही की एक ख़ास तजल्ली उस पर पड़ती है और उस को एक पूरा रंग इशक़ और मुहब्बत का देकर क़वी जज़्बा के साथ अपनी तरफ़ खींच लेती है। तब भावनाओं और तामसिक इच्छाओं पर वह विजय पा लेते है और उस की ताईद और नुसरत में हर एक पहलू से ख़ुदा तआला के इंसानी शक्ति से परें के कर्म निशानों के रंग में ज़ाहिर होते हैं।

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 67)

अल्लाह तआला हम सबको तौहीद (एकेश्वरवाद) बारी तआला के सम्बन्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की महान शिक्षाओं पर दिल और जान से आमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं आमीन।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बाहरी तथी आन्तरिक स्वच्छता

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह

हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) की बाह्य और आंतरिक स्वच्छता

हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) के सम्बन्ध में आता है कि न आप कभी अपशब्दों का प्रयोग करते थे और न व्यर्थ क़समें खाते थे। (बुख़ारी किताबुल अदब) अरब में रहते हुए इस प्रकार का चरित्र एक असाधारण बात थी। हम यह तो नहीं कह सकते कि अश्लीलता अरब लोगों का स्वभाव बन चुकी थी; नि:संदेह अरब लोग आदत के तौर पर क़समें अवश्य खाया करते थे और आज भी अरब में क़सम का प्रचलन अत्यधिक है परन्तु मुहम्मद (स.अ.व.) के मानसपटल में ख़ुदा तआला की मान-प्रतिष्ठा इतनी अधिक थी कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) उसका अकारण (व्यर्थ की क़समें खाने के लिए) नाम लेना कभी पसन्द न करते थे। आप को स्वच्छता का विशेष ध्यान रहता था। आप हमेशा दातुन करते थे और इस पर इतना बल देते थे कि कई बार फ़रमाते यदि मुझे इस बात का भय न हो कि मुसलमान कष्ट में पड़ जाएँगे तो मैं प्रत्येक नमाज़ से पूर्व दातुन करने का आदेश दे दूँ। (मिश्कात किताबुत्तहारत)

आप स. भोजन करने से पूर्व भी हाथ धोते तथा भोजन करने के पश्चात् भी हाथ धोते और कुल्ली करते थे अपितु प्रत्येक पकी हुई वस्तु खाने के पश्चात् कुल्ली करते। आप पकी हुई वस्तु खाने के पश्चात् बिना कुल्ली कि नमाज़ पढ़ना पसन्द नहीं करते थे। (बुख़ारी किताबुल अतइमह)

मस्जिदें जो मुसलमानों के एकत्र होने का एक मात्र स्थान हैं— आप उनकी स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते थे तथा आप स. मुसलमानों को इस बात की प्रेरणा देते थे कि वे विशेष तौर पर समारोहों के दिनों में मस्जिदों की स्वच्छता का ध्यान रखा करें तथा उनमें सुगंधि की व्यवस्था किया करें ताकि वायु शुद्ध हो जाए। (मिश्कात किताबुस्सलात) इसी प्रकार आप सहाबा को सदैव नसीहत करते रहते थे कि समारोहों के अवसर पर दुर्गन्ध फैलाने वाली वस्तुएँ खाकर न आया करें। (बुख़ारी किताबुल अतइमह) आप स. सड़कों की सफाई की विशेष तौर पर नसीहत करते रहते थे। यदि सड़क पर कूड़ा कर्कट, ईंट-पत्थर अथवा अन्य कोई कष्टदायक वस्तु पड़ी होती तो आप स्वयं उसे उठा कर सड़क के एक ओर कर देते और फ़रमाते कि जो व्यक्ति सड़कों की स्वच्छता का ध्यान रखता है ख़ुदा उस से प्रसन्न होता तथा ऐसा व्यक्ति पुण्य प्राप्ति का पात्र बन जाता है। (मुस्लिम किताबुलबिर्र वस्सिलह) इसी प्रकार आप फ़रमाते थे कि मार्ग को रोकना नहीं चाहिए, मार्गों पर बैठना अथवा उनमें कोई ऐसी वस्तु डाल देना जिस से यात्रियों को कष्ट हो, या मार्ग पर शौचादि करना आदि कृत्यों को ख़ुदा तआला पसन्द नहीं करता।

(मिश्कात किताबुत्तहारत)

पानी की शुद्धता का भी आप को विशेष तौर पर ध्यान रहता था। आप अपने सहाबा को हमेशा यह नसीहत करते थे कि अवरुद्ध हुए पानी में किसी प्रकार की गन्दगी नहीं डालना चाहिए। इसी प्रकार अवरुद्ध हुए पानी में शैचादि करने से भी बड़ी सख़्ती के साथ रोकते थे।

(बुख़ारी किताबुलवुज़ू)

खान-पान में सादगी और संतुलन

आप खान-पान में सादगी को हमेशा दृष्टिगत रखते थे। भोजन में कभी नमक अधिक हो जाए या नमक न हो या खाना अच्छा न पका हो तो आप कभी भी रुष्ट नहीं होते थे, यथा संभव आप ऐसा भोजन खा कर पकाने वाले के हृदय को कष्ट से बचाने का प्रयास करते थे परन्तु यदि बिल्कुल ही असहनीय होता तो आप केवल हाथ रोक लेते थे और यह प्रकट नहीं होने देते थे कि मुझे इस भोजन से कष्ट पहुँचता है। (बुख़ारी किताबुल अतइमह अन अबी हुरैरा) जब आप भोजन करने लगते तो भोजन की ओर ध्यान देते हुए बैठते तथा फ़रमाते कि मुझे यह अहंकारपूर्ण आचरण पसन्द नहीं कि कुछ लोग टेक लगाकर भोजन करते हैं जैसे वे भोजन से निस्पृह हैं। (बुख़ारी किताबुल अतइमह) जब आपके पास कोई वस्तु आती तो

अपने साथियों में बांटकर खाते। एक बार आप के पास कुछ खजूरें आईं। आप ने साथियों का अनुमान लगाया तो सात-सात खजूरें प्रति सदस्य आती थीं; आप ने सात-सात खजूरें समस्त साथियों में बांट दीं। (बुख़ारी किताबुलअतइमह अन अबी हुरैरा) हज़रत अबू हुरैरा वर्णन करते हैं कि

मुहम्मद रसूसुल्लाह (स.अ.व.) ने जौ की रोटी भी कभी भर पेट नहीं खाई। (बुख़ारी किताबुल अतइमह)

एक बार आप मार्ग से गुज़र रहे थे कि आप ने देखा कि लोगों ने एक बकरी भून कर रखी हुई है और लोग दा'वत का आनन्द ले रहे हैं। आप स. को देखकर उन लोगों ने आपको भी बुलाया परन्तु आप स. ने इन्कार कर दिया। (बुख़ारी किताबुल अतइमह) इसका कारण यह न था कि आप भुना हुआ गोश्त खाना पसन्द नहीं करते थे अपितु आपको इस प्रकार का आडम्बर पसन्द न था कि पास ही निर्धन लोग तो भूख से व्याकुल हों तथा उनकी आखों के सामने लोग बकरे भून-भून कर खा रहे हों अन्यथा दूसरी हदीसों से सिद्ध है कि आप भुना हुआ गोश्त भी खाया करते थे।

हज़रत आयशा रज़ि. भी वर्णन करती हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने कभी निरन्तर तीन दिन भर पेट भोजन नहीं किया तथा रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का जीवन पर्यन्त यही आचरण रहा। (बुख़ारी किताबुल अतइमह) भोजन के बारे में आप इस बात का विशेष ध्यान रखते थे कि कोई व्यक्ति किसी दा'वत के अवसर पर बिना निमंत्रण दूसरे के घर भोजन करने न चला जाए। एक बार एक व्यक्ति ने आप की दा'वत की और यह भी निवेदन किया कि आप अपने साथ अन्य चार लोगों को ले आएं। जब आप स. उसके घर के द्वार पर पहुँचे तो आपको मालूम हुआ कि एक पांचवां व्यक्ति भी आप के साथ है। जब घर वाला बाहर निकला तो आप स. ने उस से कहा— आप स. ने हम पाँच लोगों को ही दा'वत के लिए आमंत्रित किया था , आप चाहें तो इसे भी अनुमति दे दें और चाहें तो वापस कर दें। घर वाले ने कहा, नहीं। मैं उनको भी दा'वत में सम्मिलित करता हूँ, यह भी अन्दर आ जाएं। (बुख़ारी किताबुल अतइमह)

जब आप स. भोजन करते तो हमेशा बिस्मिल्लाह कह कर भोजन आरम्भ करते थे और भोजन समाप्त करने के पश्चात् इन शब्दों में ख़ुदा तआला का यशोगान करते—

الحمد لله حمدا كثيرا طيبا مباركا فيه غير مكفي ولا مودوع ولا مستغنى عنه ربنا

अर्थात् मैं उस ख़ुदा का यशोगान करता हूँ जिसने मुझे खाना खिलाया, वही सब प्रकार की श्रेष्ठ प्रशंसाओं तथा यशोगान का पात्र है, जो हर प्रकार की न्यूनताओं और त्रुटियों से रहित, विशुद्ध तथा सदा-सर्वदा बढ़ती रहने वाली हैं। हे ख़ुदा ! मेरे मन में कभी यह कुविचार उत्पन्न न हो कि मैंने धन्यवाद स्वरूप तेरा जितना गुणगान कर लिया, वही पर्याप्त है और इस से अधिक यशोगान की आवश्यकता नहीं अथवा तेरा ऐसा भी कार्य है जिसकी प्रशंसा की आवश्यकता नहीं अथवा जो प्रशंसा के योग्य नहीं। हे हमारे रब्ब ! हमें ऐसा ही बना दे। कुछ वर्णनों में आता है कि आप कभी इन शब्दों में दुआ करते थे—

الحمد لله الذی کفانا واراونا غیر مکفی ولا مکفورا

(बुख़ारी किताबुल अतइमह) अर्थात् सब प्रशंसा परमेश्वर की है जिसने हमारी भूख और प्यास दूर की। हमारा हृदय उसकी प्रशंसा करने से कभी तृप्त न हो तथा हम उसके कभी कृतघ्न न बनें।

आप हमेशा अपने सहाबा को उपदेश दिया करते थे कि पेट भरने से पूर्व खाना छोड़ दो तथा एक मनुष्य का भोजन दो मनुष्यों के लिए पर्याप्त होना चाहिए। (बुख़ारी किताबुल अतअमह) जब भी आप के घर में कोई अच्छी वस्तु पकती तो आप हमेशा अपने घर में कहते थे कि अपने पड़ोसियों का भी ध्यान रखो। (मुस्लिम किताबुलबि र्रवस्सिल:) इसी प्रकार अपने पड़ोसियों के घरों में आप अक्सर उपहार भिजवाते रहते थे। (बुख़ारी किताबुल अदब) आप अपने असहाय सहाबा के चेहरे देखकर मालूम करते रहते थे कि उनमें से कोई भूखा तो नहीं। हज़रत अबू हुरैरा वर्णन करते हैं कि एक बार वे कई दिन अनाहार रहे। एक दिन जब सात समय से भोजन नहीं मिला था तो वे भूख से व्याकुल होकर मस्जिद के द्वार के सामने खड़े हो गए। संयोगवश हज़रत अबू बकर रज़ि . वहाँ से गुज़रे तो उन्होंने उन से एक ऐसी आयत का अर्थ पूछा जि समें निर्ध नों को भोजन कराने का आदेश है। हज़रत अबू बकर ने उनकी बात से यह समझा कि शायद इस आयत का अर्थ उन्हें ज्ञात नहीं और वह उस आयत का अर्थ बता कर आगे चल दिए। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि . जब लोगों के सामने यह बात वर्णन करते तो क्रोध से कहा करते— क्या अबू बकर रज़ि . मुझ से अधिक क़ुर्आन जानता था , मैंने आयत का अर्थ इसलिए पूछा था कि इस आयत में निहित विषय की ओर उन का ध्यान आकृष्ट हो जाए और मुझे भोजन करा दें। इतने में हज़रत उमर रज़ि. वहाँ से गुज़रे। अबू हुरैरा रज़ि. कहते हैं मैंने उन से भी इस आयत का अर्थ पूछा। हज़रत उमर रज़ि. ने भी उस आयत का अर्थ बता दिया और आगे चल दिए। सहाबा रज़ि. मांगने को बहुत बुरा समझते थे। जब अबू हुरैरा रज़ि. ने देखा कि बिना मांगे भोजन प्राप्त होने का कोई उपाय नहीं। वह कहते हैं— मैं बिल्कुल निढाल होकर गिरने लगा, क्योंकि अब अधिक धैर्य की मुझ में शक्ति नहीं थी परन्तु अभी मैंने द्वार से मुंह नहीं फेरा था कि मेरे कान में

एक अति मधुर एवं स्नेहसिक्त ध्वनि सुनाई दी, कोई मुझे बुला रहा था — अबू हुरैरा ! अबू हुरैरा ! मैंने मुड़ कर देखा तो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) अपने घर की खिड़की खोले खड़े थे और मुस्करा रहे थे। मुझे देख कर फ़रमाया— अबू हुरैरा भूखे हो? मैंने कहा हाँ ! हे अल्लाह के रसूल भूखा हूँ। आप स. ने कहा हमारे घर में भी खाने के लिए कुछ नहीं था ; अभी एक व्यक्ति ने दूध का प्याला भिजवाया है। तुम मस्जिद में जाओ और देखो कि शायद हमारे तुम्हारे समान कोई और भी मुसलमान हों जिन्हें भोजन की आवश्यकता हो। अबू हुरैरा कहते हैं — मैंने हृदय में कहा— मैं तो इतना भूखा हूँ कि अकेला ही इस प्याले को पी जाऊँगा, अब तो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अन्य लोगों को बुलाने के लिए भी कहा है तो फिर मुझे तो बहुत थोड़ा दूध मिल पाएगा परन्तु बहरहाल मुहम्मद (स.अ.व.) का आदेश था । मस्जिद के अन्दर गए तो देखा कि छ: लोग और बैठे हैं; उन्होंने उन्हें भी साथ लिया और रसूले करीम (स.अ.व.) के द्वार के पास आए। आप स. ने दूध का प्याला पहले उन नए आने वाले छ: लोगों में से कि सी के हाथ में दे दि या और कहा इसे पी जाओ। जब उसने दूध पीकर प्याला मुँह से पृथक कि या तो आप स. ने आग्रह किया कि और पियो, तीसरी बार भी आग्रह करके उसे दूध पी लाया। हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं— हर बार मैं कहता था कि अब मैं मरा, मेरा हिस्सा क्या शेष रहेगा परन्तु जब वे सभी छ: लोग पी चुके तो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने वह प्याला मेरे हाथ में दे दिया। मैंने देखा अभी प्याले में बहुत दूध शेष था। जब मैंने दूध पिया तो आप स. ने मुझे भी आग्रह करके तीन बार दूध पी लाया। फिर मेरा बचा हुआ दूध स्वयं भी पिया और ख़ुदा तआला का धन्यवाद करते हुए द्वार बन्द कर लिया। (बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक)

कदाचित् रसूले करीम (स.अ.व.) ने अबू हुरैरा को सब से अन्त में दूध यही पाठ देने के लिए दिया था कि उन्हें ख़ुदा पर भरोसा करते हुए अनाहार बैठे रहना चाहिए और सांकेतिक तौर पर भी प्रश्न नहीं करना चाहिए था।

आप हमेशा दाएँ हाथ से खाना खाते थे और पानी भी दाएँ हाथ से पीते थे। पानी पीते समय मध्य में तीन बार साँस लेते थे। इसमें एक चिकित्सकीय रहस्य है। पानी यदि एक सांस में पी लिया जाए तो अधिक मात्रा में पी लिया जाता है जिस से आमाशय में दोष आ सकता है। खाने के बारे में आप स. का नियम यह था कि जो वस्तुएँ पवित्र और स्वभाव के अनुकूल हों उन्हीं को खाएँ परन्तु इस ढंग से नहीं कि निर्धनों का हक़ मारा जाए या मनुष्य को भोग-विलास की आदत पड़ जाए। अत: सामान्यतया जैसा कि वर्णन किया जा चुका है आप का भोजन बहुत सादा था परन्तु यदि कोई व्यक्ति अच्छी वस्तु बतौर उपहार ले आता था तो आप उसे खाने से इन्कार न करते परन्तु यों अपने खान-पान हेतु आप अच्छे भोजन की अभि लाषा कभी नहीं करते थे। शहद आप को पसन्द था , इसी प्रकार खजूर भी। आप का कथन था कि खजूर और मोमिन के मध्य एक संबंध है। खजूर के पत्ते भी और उसका छिलका भी और उस का कच्चा फल भी और उस का पक्का फल भी और उसकी गुठली भी सभी वस्तुएँ उपयोगी हैं, उसकी कोई वस्तु भी व्यर्थ नहीं। पूर्ण मोमिन भी ऐसा ही होता है, उसका कोई कार्य भी निरर्थक नहीं होता अपितु उस का प्रत्येक कार्य मानव समाज के लिए लाभप्रद होता है।

वस्त्राभूषण में संयम और सरलता

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) लि बास के बारे में सादगी को पसन्द करते थे। आप स. का सामान्य लि बास कुर्ता, धोती और पाजामा होता था। आप अपनी धोती या पाजामा टखनों से ऊपर और घुटनों से नीचे रखते थे। घुटनों और घुटनों से ऊपर शरीर के नंगे हो जाने को आप स. पसन्द नहीं करते थे। ऐसा वस्त्र जिस पर चित्रकारी हो सिवाए विवशता के पसन्द नहीं करते थे। न मानवीय वस्त्रों में न ही पर्दों आदि के रूप में, विशेषकर बड़े चित्र जो कि द्वैतवाद के लक्षणों में से हैं आप उनकी कभी अनुमति नहीं देते थे। एक बार आपके घर में ऐसा कपड़ा लटका हुआ था , आप ने देखा तो उसे उतरवा दिया। हाँ जिस वस्त्र पर छोटे-छोटे चित्र बने हों उस कपड़े में कोई हानि नहीं समझते थे; क्योंकि उन से द्वैतवादी विचारों की ओर संकेत नहीं होता। आप रेशमी कपड़ा कभी नहीं पहनते थे और न अन्य मुसलमान पुरुषों को रेशमी कपड़ा पहनने की अनुमति देते थे। बादशाहों के पत्र लिखने के समय आप ने अपने लिए एक मुहरवाली अंगूठी बनवाई थी परन्तु आप ने आदेश दिया कि सोने की अंगूठी न हो अपितु चांदी की हो क्योंकि ख़ुदा तआला ने मेरी उम्मत के पुरुषों के लिए सोना पहनना मना किया है, स्त्रियों को नि:संदेह रेशमी कपड़े और आभूषण पहनने की आज्ञा थी। इस बारे में आप नसीहत करते रहते थे कि आति शयता न की जाए। एक बार निर्धनों के लि ए आप ने चन्दा एकत्र किया, एक स्त्री ने एक कंगन उतार कर आप के आगे रख दिया। आप स. ने कहा— क्या दूसरा हाथ नर्क से सुरक्षित रहने का अधिकारी नहीं? उस स्त्री ने दूसरा कंगन भी उतार कर निर्धनों के लिए दे दिया। आपकी पत्नियों के आभूषण न होने के बराबर थे। आपकी सहाबी स्त्रियां आपकी शिक्षा का पालन करते हुए आभूषण बनाने से बचती थीं। आप क़ुर्आनी शिक्षानुसार फ़रमाते थे— धन को संचित करके रखना निर्धनों के अधिकारों को नष्ट कर देता है इसलिए सोना-चांदी को किसी भी रूप में संचित कर लेना समाज की आर्थिक अवस्था को नष्ट करने वाला है और अपराध है। एक बार हज़रत उमर रज़ि . ने आप स. से विनयपूर्वक अनुरोध कि या कि अब बड़े-बड़े राजाओं की ओर से राजदूत आने लगे हैं आप एक मूल्यवा न अंगरखा ले लें और ऐसे अवसरों पर प्रयोग किया करें। आप स. हज़रत

उमर रज़ि .की इस बात को सुन कर बहुत अप्रसन्न हुए और फ़रमाया ख़ुदा तआला ने मुझे इन बातों के लिए पैदा नहीं कि या। ये आडम्बर की बातें हैं हमारा जैसा लिबास है हम उसी के साथ सब से मिलेंगे। एक बार आपके पास एक रेशमी अंगरखा लाया गया तो आप स. ने हज़रत उमर रज़ि . को उपहार स्वरूप दे दि या। दूसरे दिन देखा हज़रत उमर रज़ि . उसे पहने घूम रहे हैं। आप ने इस पर नाराज़गी जताई। जब हज़रत उमर रज़ि . ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! आप ने ही तो उपहार दिया था , तब आप स. ने फ़रमाया हर वस्तु अपने ही उपयोग के लिए तो नहीं होती अर्थात् यह अंगरखा चूंकि रेशम का था आपको चाहिए था कि यह अपनी पत्नी को दे देते या अपनी बेटी को दे देते अथवा किसी अन्य कार्य में ले आते। उसे अपने लिबास के तौर पर प्रयोग करना उचित नहीं था।

बिस्तर में सादगी

आप स. का बिस्तर भी बहुत सादा होता था। सामान्यतया एक चमड़ा या ऊँट के बालों का एक कपड़ा होता था। हज़रत आयशा रज़ि . फ़रमाती हैं कि हमारा बिस्तर इतना छोटा था कि जब मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) रात को इबादत (उपासना) के लिए उठते तो मैं एक ओर होकर लेट जाती थी और बिस्तर छोटा होने के कारण जब आप इबादत के लिए खड़े हो जाते तो मैं टांगे लम्बी कर लिया करती और जब आप सज्दह करते तो मैं टांगें समेट लिया करती।

मकान और रहन-सहन में सादगी

आप स. रहने के मकान के संबंध में सादगी पसन्द करते थे। सामान्यरूप से आप के घरों में एक-एक कमरा होता था और छोटा सा आंगन। इस कमरे में एक रस्सी बंधी हुई थी जिस पर कपड़ा डाल कर पर्दा करके नियत समय पर मुलाकात करने वालों से पृथक बैठकर बात कर लि या करते थे। आप चारपाई प्रयोग नहीं करते थे अपितु धरती पर ही बिस्तर बिछाकर सोते थे। आप के रहन सहन में इतनी अधिक सादगी थी कि हज़रत आयशा रज़ि . ने आपके निधन के पश्चात् फ़रमाया— हमें रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के समय में कई बार मात्र पानी और खजूर पर ही गुज़ारा करना पड़ता था , यहां तक जिस दिन आप का निधन हुआ उस दिन भी हमारे घर में खाने के लिए पानी और खजूर के अतिरिक्त कुछ नहीं था ।

ईश्वर-प्रेम तथा उसकी उपासना

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का सारा जीवन ख़ुदा के प्रेम में लीन दिखाई देता है। आप इतने बड़े समाजिक उत्तरदायित्व के बावजूद दिन-रात इबादत में व्यस्त रहते थे। अर्धरात्रि व्यतीत होने पर आप ख़ुदा की इबादत के लिए खड़े हो जाते और प्रात:काल तक इबादत करते चले जाते, यहाँ तक कि कई बार आप के पैर सूज जाते थे और आप के देखने वालों को आप की दशा पर दया आती थी। हज़रत आइशा रज़ि . कहती हैं एक बार मैंने ऐसे ही अवसर पर कहा हे अल्लाह के रसूल ! आप को ख़ुदा तआला का पहले ही सानिध्य प्राप्त है फिर आप स्वयं को इतना कष्ट क्यों देते हैं आप ने फ़रमाया— हे आयशा ! افلا اکون عبدا شکورا जब यह बात सत्य है कि मुझे ख़ुदा तआला का सानि ध्य प्राप्त है। यह उसकी मुझ पर महान् कृपा है तो क्या मेरा यह कर्त्तव्य नहीं कि मैं यथाशक्ति उस का धन्यवाद करूँ; क्योंकि धन्यवाद उपकार के मुकाबले पर ही हुआ करता है।

आप कोई महत्त्वपूर्ण कार्य ख़ुदा की आज्ञा के बिना नहीं करते थे। अत: आप की जीवनी में इसका उल्लेख किया जा चुका है कि मक्का के लोगों के भयंकर अत्याचारों के बावजूद आप स. ने मक्का को उस समय तक न छोड़ा जब तक कि ख़ुदा तआला की ओर से आप पर वह्यी (ईशवाणी) नहीं उतरी और आपको वह्यी द्वारा मक्का छोड़ने की आज्ञा न दी गई। मक्का वालों के भयंकर अत्याचारों को देखकर आप ने जब सहाबा के हबशा की ओर हिजरत (प्रवास) कर जाने की आज्ञा दी तथा उन्होंने आप से उनुरोध किया कि आप भी उनके साथ चलें तो आप ने फ़रमाया— मुझे अभी ख़ुदा तआला की ओर से आज्ञा प्राप्त नहीं हुई। अत्याचार और आतंक के समय जब लोग अपने मित्रों और परिजनों को अपने पास एकत्र कर लेते हैं आपने अपनी जमाअत को हबशा की ओर हिजरत करके जाने का निर्देश दिया और स्वयं अकेले मक्का में रह गए। इसलिए कि आप के ख़ुदा ने आप को अभी हिजरत करने की आज्ञा नहीं दी थी। आप ख़ुदा की वाणी सुनते तो आपकी आँखों में स्वत: आँसू आ जाते, विशेष कर वे आयतें जिन में आप के दायित्त्वों की ओर ध्यान दिलाया गया है। अत: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि . वर्णन करते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया— क़ुर्आन करीम की कुछ आयतें पढ़कर सुनाओ। मैंने उत्तर में कहा— हे अल्लाह के रसूल ! क़ुर्आन तो आप पर उतरा है आप को क्या सुनाऊँ? आप ने फ़रमाया— मैं चाहता हूँ कि दूसरे लोगों से भी क़ुर्आन पढ़वा कर सुनूं। इस पर मैंने सूरह 'अन्नि सा' पढ़ कर सुनाना आरम्भ कि या, जब पढ़ते-पढ़ते मैं अन्नसिा आयत 40 पर पहुँचा कि अर्थात् उस समय क्या दशा होगी जब हम प्रत्ये क जाति में से उसके नबी को उसकी जाति के सामने खड़ा करके उस जाति का हिसाब लेंगे और तुझे भी तेरी जाति के सामने खड़ा करके उसका हि साब लेंगे तो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया— "पर्याप्त है, पर्याप्त है"।

मैंने आपकी ओर देखा तो आप की दोनों आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे। आप को नमाज़ की पाबन्दी का इतना ध्यान रहता था कि अत्यिधक बीमारी की अवस्था में जब कि ख़ुदा तआला की ओर से घर में नमाज़ पढ़ लेने तथा लेट कर पढ़ लेने तक की अनुमति होती है आप सहारा लेकर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिए आते। एक दिन आप नमाज़ के लिए न आ सके तो हज़रत अबू बक़र रज़ि . को नमाज़ पढ़ाने का आदेश दिया परन्तु इतने में तबियत में कुछ सुधार प्रतीत हुआ तो तुरन्त दो लोगों का सहारा लेकर मस्जिद की ओर चल पड़े परन्तु दुर्बलता की यह अवस्था थी कि हज़रत आइशा रज़ि. फ़रमाती हैं— आप के दोनों पैर पृथ्वी पर घसिटते जाते थे। संसार में प्रशंसा और ध्यानाकर्षण के लिए तालियां बजाई जाती हैं, अरबों में भी यही प्रचलन था परन्तु आप स. को ख़ुदा तआला का स्मरण और उसकी स्तुति इतनी पसन्द थी कि इस उद्देश्य के लिए भी ख़ुदा की स्तुति करने का ही आदेश दिया। अत: उल्लेख है कि एक बार आप स. किसी कार्य में व्यस्त थे कि नमाज़ का समय हो गया। आप ने फ़रमाया—

अबू बकर रज़ि . नमाज़ पढ़ा दें। इतने में आप कार्य से निवृत्त हो गए और तुरन्त मस्जिद की ओर चल पड़े। जब आप मस्जिद में पहुँचे तो हज़रत अबू बकर रज़ि . नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब लोगों को मालूम हुआ कि आप मस्जिद में आ गए हैं तो शीघ्रता से तालियां बजाना आरम्भ कर दिया, जिससे एक ओर तो यह बताना अभीष्ट था कि आप स. के आने से उनके हृदय बहुत प्रसन्न हो गए हैं तथा दूसरी ओर अबू बकर को यह ध्यान दिलाना भी अभीष्ट था कि अब आपकी इमामत समाप्त हुई, अब रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पहुँच गए है। हज़रत अबू बकर पीछे हट गए और आप स. के लि ए इमाम का स्थान खाली कर दिया। नमाज़ के पश्चात आप स. ने फ़रमाया— अबू बकर ! जब मैंने तुम्हें नमाज़ पढ़ाने का आदेश दिया था तो तुम पीछे क्यों हट गए? अबू बकर रज़ि. ने कहा— हे अल्लाह के रसूल ! अल्लाह के रसूल की उपस्थिति में अबू क़ुहाफ़ा के बेटे की क्या हैसियत थी कि वह नमाज़ पढ़ाए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
एक इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) के विशेषज्ञ के रूप में
(हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए रज़ियल्लाहु अन्हो)

नबियों की एक नुमायां विशेषता

संसार में बहुत से लोग इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) के विशेषज्ञ गुज़रे हैं और आजकल तो यह ज्ञान विशेषता बहुत प्रगति कर गया है लेकिन ग़ौर से देखा जाए तो अधिकतर लोग जो इस ज्ञान के ज्ञानी कहलाते हैं, उनका ज्ञान केवल इस्तिलाहात की वाक़फियत तक सीमित होता है और यदि इस्तिलाहात के ज्ञान से ऊपर गुज़र कर कभी किसी की हक़ीक़ी ज्ञान तक पहुँच भी होती है तो वह केवल उस फ़न के ज्ञान के हिस्सा तक सीमित रहती है और उसका अमली हिस्सा जो वास्तव में उद्देशित है इस फ़न के अधिकतर विशेषज्ञों की प्राप्ति की सीमा से बाहर रहता है और केवल इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) पर ही आधारित नहीं, संसार में बहुत से उलूम इसी नामुरादी की हालत में पाए जाते हैं कि लोगों का ज्ञान का क्षेत्र इस्तिलाहात की हद से आगे नहीं जाता। और जिन सूरतों में वे आगे जाता भी है वह केवल ज्ञान के पहलू तक सीमित रहता है और उलूम के अमली प्रयोग तक बहुत ही कम लोग पहुंचते हैं। मंतिक़ के ज्ञान को देखो तो हज़ारों लाखों इस ज्ञान के विशेषज्ञ नज़र आएँगे परन्तु उनका ज्ञान इस्तिलाहात से आगे नहीं जाता और उनकी प्यारी आयु इस्तिलाहात के रटने में ही खर्च हो जाती है और इस ज्ञान का जो हक़ीक़ी उद्देश्य है कि तर्क-वितर्क और टेढ निकालने का सही मलिका पैदा हो जाए इस से अधिकतर लोग वंचित रहते हैं बल्कि कभी-कभ मंतक़ी लोग अपने दलायल में ज़्यादा अज्ञान और ऊपरी पाए गए हैं क्योंकि इस्तिलाहात की उलझन उन के लिए हक़ीक़त तक पहुंचने के रस्ते में रोक बन जाती है लेकिन आम लोगों के मुक़ाबिल पर यदि नबियों के हालात पर नज़र डाली जाए तो यह विशेषता नुमायां सूरत में नज़र आती है कि उनके समस्त उलूम हक़ीक़त पर आधारित होते हैं बल्कि वे कभी कबार उलूम की इस्तिलाहात से ज़ाहिरी शिक्षा की कमी के कारण वाक़िफ़ नहीं होते परन्तु हर ज्ञान जो उनके क्षेत्र से सम्बन्ध रखता है उसके असल उद्देश्य या अन्य शब्दों इस ज्ञान के गूदे और जोहर से उन्हें पूरी-पूरी वाक़फियत होती है और उनसे बढ़कर कोई व्यक्ति ऐसे ज्ञान का ज्ञानी मिल नहीं सकता।

नबी और इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक)

इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) भी जो गोया इन्सान के ज़हनी और कलबी तास्सुरात का ज्ञान है नबियों के विशेष ज्ञान का हिस्सा है क्योंकि तर्बीयत और इस्लाह के काम से इस ज्ञान को ख़ास सम्बन्ध है बल्कि हक़ यह है कि शरीयत की दाग़ बैल ज़्यादा-तर इसी ज्ञान के आधार पर क़ायम होती है लेकिन जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ हमें बताता है और हालात से भी यही ज़ाहिर होता है नबियों के भी श्रेणियां हैं जैसा-जैसा काम किसी नबी के सपुर्द होना होता है उसी के अनुसार उसे ख़ुदा तआला की तरफ़ से तौफ़ीक़ दी जाती और उलूम के दरवाज़े खोले जाते हैं।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक)

हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चूँकि ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे और बख़िलाफ़ पिछले नबियों के सारे संसार की इस्लाह के लिए प्रकट हुए थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पैग़ाम हर काले और गौरे के नाम था। और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शरीयत हर क़ौम और हर ज़माने के लिए भेजी गई थी। इस लिए स्वभाविक रूप में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अंदर वह शक्तियां भी डाली गई थीं और वे उलूम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को प्रदान हुए थे जो इस महान काम के सरअंजाम देने के लिए आवश्यक थे और इस में किसी नबी का अपमान नहीं है कि दूसरे नबियों में से किसी को वे उलूम नहीं दिए गए जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिए गए और कोई इन कुव्वतों को साथ लेकर नहीं आया जिन्हें लेकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़ाहिर हुए। इसी लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है। اَنَاسَیِّدُ وَلَدِاٰدَمَ وَلَافَخۡرَ م मैं आदम की औलाद का सरदार हूँ परन्तु इस के कारण से में अपने नफ़्स में कोई तकब्बुर नहीं पाता और जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम रसूलों में सबसे बड़े थे तो आवश्यक था कि इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) में भी जिसका जानना नबुव्वत के फ़रायज़ की अदायगी के साथ जबकि लाज़िम-ओ-मलज़ूम के तौर पर हैं, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सब से अव्वल और सबसे आगे हों और हम देखते हैं कि वास्तव में ऐसा ही था चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ख़ुदा तआला ने तर्बीयत और इस्लाह का महान और जिस की उदाहरण भी प्रस्तुत नहीं की जा सकती ऐसा काम लेना था। इस लिए यह ज्ञान आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वजूद में इस तरह सरायत किए हुए था जैसे एक उम्दा स्पंज का टुकड़ा पानी में डुबो कर निकालने के बाद पानी से भरा हुआ होता है और एक क़ुदरती चश्मे के तौर पर इस ज्ञान की अबदी सदाक़तें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से फूट फूट कर बेहती थीं। चूँकि मेरे लिए इस मुख़्तसर मज़मून में इस विषय के सारे पहलूओं को वर्णन करने की संभावना नहीं है बल्कि किसी एक पहलू को भी तफ़सील के साथ वर्णन नहीं किया जा सकता, इस लिए मैं इस जगह निहायत इख़तिसार के साथ केवल कुछ मिसालें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कलाम में से वर्णन करूँगा जिनसे यह पता लगता है कि किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हर बात इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) के अबदी सिद्धांत के साँचे में ढली हुई निकलती थी और ज़्यादा इख़तिसार के विचार से मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कलाम मैं से भी केवल इस हिस्से को लूँगा जो हर रोज़ की बात चीत और सहसा निकली हुई बातों से सम्बन्धित है।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कलाम का कमाल

मैं बता चुका हूँ कि आम ज़बान में इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) इस ज्ञान का नाम है जो इन्सानी ज़हन की तशरीह और इस के काम से सम्बन्ध रखता है। इस ज्ञान में ज़हनी और कलबी तास्सुरात से बेहस की जाती है और यह बताया जाता है कि इन्सान अपने माहौल से किस तरह असर क़बूल करता है और उसके ख़्यालात की रोईं किस तरह और किन सिद्धांत के अंतर्गत चलती हैं। इत्यादि। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कलाम में यह कमाल था कि इस में सम्बोधित फ़र्द या जमाअत की ज़हनी कैफ़ीयत का पूरा पूरा लिहाज़ रखा जाता था और किसी फ़र्द या जमाअत के ख़्यालात की इस्लाह के लिए जो बेहतरीन तरीक़ हो सकता है उस के अनुसार आपकी ज़बान मुबारक मानों होती थी और इस लिए अतिरिक्त इसके कि ख़ुदा की इच्छा दूसरी तरह हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हर बात एक लोहे के तीर की तरह सामने वाले के दिल में धँस जाती थी और आप अपने सम्बोधित करने वाले के ख़्यालात को ग़लत रस्ते पर जाता देखकर या यह समझ कर कि उसके ग़लत रस्ते पर पड़ने

की सम्भावना है तुरंत ऐसी बात फ़रमाते थे जो सामने वाले के ज़हन को काट कर उस का रुख बदल देती थी। ऐसी मिसालें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में हज़ारों मिलती हैं बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी ही इसकी मिसाल है परन्तु मैं इस जगह बतौर उदाहरण केवल कुछ मिसालें वर्णन कर देने पर इकतिफ़ा करूँगा। وَ مَا تَوْفِیْقِیْ اِلَّا بِاللّٰہِ

जंग-ए-बदर के अवसर की मिसाल

जंग-ए-बदर के अवसर पर जब कि अभी मुस्लमान लश्कर कुफ़्फ़ार के सामने नहीं हुए थे और अधिकतर मुस्लमान इस बात से बे-ख़बर थे कि कुफ़्फ़ार का एक जर्रार लश्कर मक्का से निकल कर आ रहा है और केवल इस विचार से घर से निकले थे कि क़ाफ़िले से सामना होगा, उस वक़्त कुछ सहाबा ने कुफ़्फ़ार-ए-मक्का का एक सिपाही जो उन्हें एक चशमा पर मिल गया था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पकड़ कर प्रस्तुत किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस से लश्कर-ए-कुफ़्फ़ार के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न किए और फिर पूछा कि मक्का के सरदारों में से कौन-कौन साथ है। उसने कहा उत्बा, शेबा, उमय्या, नज़र बिन हारिस, उक़बा, अबू जहल, अबू बख़तरी, हकीम बिन हिज़ाम इत्यादि सब साथ हैं। ये लोग चूँकि क़बीला क़ुरैश के रूह-ए-रवाँ थे और निहायत बहादुर और शक्तिशाली सिपहसालार समझे जाते थे उनके नाम सुन कर और यह ज्ञात करके कि मक्का के सारे नामी लोग मुस्लमानों को जड़ से उखेड़ फेंकने के लिए निकल आए हैं, कुछ कमज़ोर सहाबा किसी क़दर घबराए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम ने उनकी तरफ़ नज़र उठा कर देखा तो सहसा फ़रमाया ھٰذِہٖ مَکَّۃُ قَدْ اَلْقَتْ اِلَیْکُمْ اَفْلَاذَ کَبِدِھَا لो मक्का ने तो तुम्हारे सामने अपने जिगर के गोशे निकाल कर रख दिए हैं। अर्थात तुम ख़ुश हो कि ख़ुदा ने तुम्हारे लिए इतना बड़ा शिकार जमा कर दिया है। सहाबा के ख़्यालात तुरंत पल्टा खा गए कि यह तो कोई घबराने का अवसर नहीं है बल्कि ख़ुदा ने अपने वादों के अनुसार इन कुफ़्फ़ार के सरदारों को हमारे हाथों तबाह करने के लिए यहां जमा कर दिया है और इस तरह वही ख़बर जो कमज़ोर तबीयत मुस्लमानों के लिए परेशानी और भय का कारण बन सकती थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम की एक बेसाख़्ता निकली हुई बात से उन के लिए ख़ुशी और तक़वियत का कारण बन गई। और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम ने यह पंक्तियाँ किसी ग़ौरो फ़िक्र के परिणाम में नहीं फ़रमाया बल्कि इधर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का के सिपाही के मुख से ये शब्द सुने और सहाबा के चेहरों पर नज़र डाल कर घबराहट के आसार देखे और उधर बेसाख़्ता तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुख से ये शब्द निकल गए। जैसा कि एक तीर अपनी कमान से निकल जाता है और इस बात के परिणाम में मुस्लमानों के ख़्यालात ने पल्टा खा कर तुरंत अपना रुख बदल लिया।

फ़तह मक्का के अवसर का उदाहरण

फ़तह मक्का के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अबू सुफ़ियान रईस मक्का की दिलदारी मंज़ूर थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके साथ इस बारे में कुछ वादे भी फ़रमाए थे। जब इस्लामी लश्कर निहायत दर्जा के शानोशौकत के साथ अपने फरैरे लहराता हुआ मक्का की तरफ़ बढ़ा और अबू सुफ्यान एक ऊंची जगह पर बैठा हुआ इस शान और अभिमान को देख रहा था तो उसके सामने से गुज़रते हुए हज़रत साद बिन उबादा रईस अंसार ने जो अपने क़बीला के सरदार और झंडा उठाने वाले थे अबू सुफ्यान को सुना कर कहा कि आज मक्का वालों की ज़िल्लत का दिन है। अबू सुफ्यान के दिल में यह बात शल्य की तरह लगी। उसने तुरंत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा: "आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुना साद ने क्या कहा है। साद कहता है कि आज मक्का की ज़िल्लत का दिन है।''

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "साद ने ग़लत कहा। आज तो मक्का की इज़्ज़त का दिन है। साअद से सरदारी का झंडा लेकर उसके बेटे के सपुर्द कर दिया जाए।"

यह एक बेसाख़्तगी का कलाम था। परन्तु देखो तो इस में इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) की कितनी अबदी सदाक़तें गुप्त हैं। पहली बात यह है कि मक्का वालों की ज़िल्लत के फ़िक़रा से यह समझा जा सकता था कि मानो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में दाख़िल हों तो मक्का वालों की यह ज़िल्लत है हालाँकि मक्का चाहे विजय हो जब वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम के झंडे के नीचे आ रहा है तो उसकी इज़्ज़त ही इज़्ज़त है। और फिर मक्का का स्थान ऐसा है कि उसे किसी सूरत में ज़िल्लत से मंसूब नहीं किया जा सकता। दूसरे साअद के फ़िक़रा से और इस फ़िक़रा के कहने के अंदाज़ से मुस्लमानों के दिलों में अबू सुफ्यान के सम्बन्ध में तिरस्कार की भावनाएं पैदा हो सकती थी परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम का उद्देश्य उस की दिलदारी करना था इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत अबू सुफ्यान की शिकायत पर साअद को डांट लगाई और मुस्लमानों के ख़्यालात को ग़लत रस्ते पर पड़ने से रोक लिया। तीसरे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह देखते हुए कि साअद के मुख से यह बात सहसा निकली है और जान-बूझ कर नहीं कही गई और फिर यह सोचते हुए कि साअद अपने क़बीला का सरदार है जहाँ तक सम्भव हो उस का तिरस्कार भी नहीं होनी चाहिए, यह हुक्म तो दिया कि इस के हाथों से सरदारी का झंडा ले लिया जाए परन्तु साथ ही यह हुक्म दिया कि यह झंडा उस से लेकर उसके बेटे के सपुर्द कर दिया जाए ताकि साअद की भी दिलदारी रहे और किसी दूसरे को भी उस पर तान देंने का अवसर न मिले। ग़ौर करो इन मुख़्तसर से शब्द में जो सहसा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुख से निकले, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नज़र कहाँ-कहाँ तक पहुंची। मानो केवल एक वाहिद में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शब्द ने कई ज़हनी दरवाज़े जो नुक़्सानदेह थे, बंद कर दिए और कई ज़हनी दरवाज़े जो नफ़ा मंद थे वे खोल दिए।

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

गज़वा-ए-हुनैन का उदाहरण

गज़वा-ए-हुनैन के बाद जब ग़िनायम (युद्ध के बाद प्राप्त हुए माल-अस्बाब और घन आदि) की तक़सीम का प्रश्न पैदा हुआ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों का दिल रखने के विचार से उन्हें ज़्यादा हिस्सा दिया। कुछ जोशीले और कम बुद्धि वाले अंसार को इस पर शिकायत पैदा हुई और उन्होंने कहा कि ख़ून तो हमारी तलवारों से टपक रहा है परन्तु उपहार मक्का वाले ले गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार को एक अलैहदा जगह में जमा किया और उनसे कहा कि मुझे ऐसी ऐसी ख़बर पहुंची है। क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं हो सके कि लोग तो भेड़ बिक्री और ऊंट लिए जाते हैं परन्तु तुम्हारे साथ ख़ुदा का रसूल जा रहा है। अंसार की बे-इख़्तियार चीख़ें निकल गईं और रोते-रोते हिचकी बंध गई। उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह हम में से कुछ नादान नौजवानों के मुख से यह पंक्तियाँ निकल गई थी। हम ख़ुदा के रसूल को लेते हैं हमें संसार की वस्तुओं से प्रेम नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "हे अंसार के गिरोह अब तुम मुझे जन्नत में हौज़-ए-कौसर पर मिलना।''

इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) के अंतर्गत इस वाक़िया के पहले हिस्सा की तशरीह स्पष्ट है। किसी नोट की आवश्यकता नहीं परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अंतिम फ़िक़रा कुछ तशरीह चाहता है। यह एक बहुत सादा और साफ़ फ़िक़रा है। परन्तु इल्मे-नफ़्स (मनोविज्ञानिक) के साँचे में किस तरह ढल कर निकला है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उद्देश्य यह था कि तुम में से कुछ ने संसार की लालच की है अब उस के निवरण में तुम संसार में इस ख़ुदाई उपहार से वंचिती रहना होगा जो संसार के उपहारों में सबसे बड़ा उपहार है। अर्थात हुकूमत और सल्तनत। लेकिन यह न समझो कि तुम्हारा इख़लास और तुम्हारी क़ुर्बानियां व्यर्थ में चली गईं बल्कि उस के लिए तुम मुझे आख़िरत में हौज़-ए-कौसर पर आकर मिलना। वहां तुम आख़िरत के उपहारों से मालामाल किए जाओगे। और ख़ुदा तुम्हारी सब कसरें निकाल देगा परन्तु संसार में हुकूमत और ताकत का उपहार अब तुम्हें नहीं मिलेगा। जबकि इस छोटे से फ़िक़रा में आपने अंसार के दिल में यह सबक़ पुख़्ता तौर पर जमा दिया कि यदि क़ौमी तौर पर मज़बूत होना चाहते हो और प्रगति करना चाहते हो तो अपने कमज़ोर साथियों को भी अपने साथ सँभाल कर चलो अन्यथा एक हिस्से का वबाल दूसरे हिस्से को भी उठाना पड़ेगा। और इसी फ़िक़रा में आपने यह भी बता दिया कि तुमने मेरा दामन पकड़ कर संसार की नेअमतों का लालच किया अब तुम्हें संसार की नेअमतों से हाथ धो बैठना चाहिए परन्तु चूँकि ख़्यालात की इस रो के साथ तुरंत यह विचार पैदा होता है कि मानो अंसार की जमाअत ख़ुदाई उपहारात से वंचित रही इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने साथ ही इस का निवारण फ़र्मा दिया कि नहीं, ऐसा नहीं बल्कि ख़ुदा उन्हें आख़िरत में उपहारों का वारिस बनाएगा और चूँकि असल ज़िंदगी आख़िरत ही की ज़िंदगी है इस लिए यदि आख़िरत में उपहार मिल जाएं तो संसार से वंचित रहना ज़रा भी स्थान नहीं है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इन पंक्तियों में यह मज़ीद लताफ़त है कि जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का असल मंशा इस अवसर पर अंसार को तनबीह करना था लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उपहार के हिस्सा को तो विस्तार के साथ-साथ शब्दों में वर्णन फ़र्मा दिया परन्तु सज़ा और वंचित के अर्थों को शब्दों में नहीं वर्णन किया बल्कि गुप्त रखा अर्थात यह नहीं फ़रमाया कि अब तुम्हें संसार में हुकूमत का उपहार नहीं मिलेगा बल्कि केवल इस क़दर फ़रमा कर ख़ामोश हो गए कि अच्छा अब तुम मुझे आख़िरत में मिलना परन्तु चूँकि यह एक भर्सना का अवसर था आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह बात नहीं खोली कि आख़िरत में तुम ख़ुदाई उपहारों से बहुत बड़ा हिस्सा पाओगे बल्कि केवल इस क़दर फ़रमाने पर इकतिफ़ा किया कि मुझे हौज़-ए-कौसर पर मिलना। अर्थात इस हौज़ पर मेरे पास आना जहां हर उपहार और हर विशेषता अपनी इंतिहा की कसरत में पाई जाएगी जिसमें इशारा यह था कि संसार की वस्तुओं से वंचित रहने का निवारण आख़िरत के उपहारों की कसरत से हो जायगा। यह अरब के बयाबानों के इस अम्मी नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कलाम है जो ज़ाहिरी ज्ञान के लिहाज़ से अबजद (अरबी में अक्षरों द्वारा अंक सूचित करने की प्रणाली) तक वंचित था

एक और अवसर का उदाहरण

ख़ुदा की मर्ज़ी के अंतर्गत एक जंग में मुस्लमानों की पराजय हुई और कई सहाबी मैदान छोड़ कर भाग निकले। बाद में ये लोग शर्म के कारण से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने नहीं आते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो उन को मस्जिद के कोने में मुँह छुपाए अन्धकार में बैठे हुए देखा तो पूछा तुम कौन हो। वे शर्म से पानी पानी हो रहे थे रो कर अर्ज़ किया। يَا رَسُوْلَ اللهِ نَحْنُ الْفَرَّارُوْنَ، हे रसूलुल्लाह। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहसा फ़रमाया। بَلْ اَنْتُمُ الْعَكَّارُوْنَ۔ नहीं नहीं तुम भगोड़े नहीं हो तुम तो दुबारा हमला के लिए तैयार बैठे हो।" अल्लाह अल्लाह क्या शान है। मैदान-ए-जंग से भागे हुए सिपाही नदामत में डूबे जा रहे हैं और अर्ज़ करते हैं कि हे रसूलुल्लाह हम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क्या मुह दिखाएंगे हम तो मैदान में पीठ दिखा चुके हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम देखते हैं कि उनकी हिम्मतें गिरी जाती हैं तुरंत फ़रमाते हैं कि तुम भगोड़े कहाँ हो तुम तो दुबारा हमला करने के लिए पीछे हट आए हो। मेरे साथ हो कर फिर जंग के लिए निकलोगे और इस एक शब्द से गिरे हुए टूटी हुई हिम्मत के सिपाहियों को उसकी टूटी हुई हिम्मत से उठा कर किस बुलंदी पर पहुंचा देते हैं!

(मज़ामीन बशीर, पृष्ठ 159-165)

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर (उत्तर प्रदेश)

तौहीद बारी तआला (एकेश्वरवाद) के सम्बन्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा

(मौलाना मुनीर अहमद ख़ादिम , नाज़िर इस्लाह व इरशाद दक्षिण भारत)

तौहीद (एकेश्वरवाद) का हक़ीक़ी ज्ञान, ऐसा ज्ञान जो तौहीद (एकेश्वरवाद) की मिराज को पहुंचा हुआ हो संसार में पहली मर्तबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वारा ज़ाहिर हुआ। संसार पहली मर्तबा वाहिद के सम्बन्ध में "अहद" की सिफ़त से भी परिचित" हुआ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो तफ़सीर सग़ीर में सूरत अल् इख़लास का अनुवाद लिखते हुए फुट नोट में तहरीर फ़रमाते हैं कि : قُلْ (कुल) शब्द जो अंतिम तीनों सूरतों से पहले रखा गया है इस में यह संकेत किया गया है कि हमारा यह संदेश आगे दूसरे लोगों तक पहुंचा दो। अब यह अनिवार्य है कि जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा का संदेश लोगों तक पहुंचा देंगे तो चूँकि उस के बाद दूसरे लोग भी قُلْ का शब्द पढ़ेंगे इस लिए उन पर भी फ़र्ज़ हो जाएगा कि वे इस कलाम को और लोगों तक पहुंचाएं। अत: قُلْ कह कर इस तरफ़ तवज्जा दिलाई गई है कि तुम हमारी इस शिक्षा को अपनी ज़ात तक सीमित न रखो, बल्कि उसे दूसरों तक पहुँचाओ। और फिर तुमसे सुनने वाले और लोगों के सामने उसे वर्णन करें और फिर वे आगे और लोगों तक पहुंचाएं यहां तक कि होते होते सारे संसार तक ख़ुदा तआला का संदेश पहुंच जाए। इसी लिए हमने उस का अनुवाद यह किया है कि "(हम हर युग के मुस्लमान को हुक्म देते हैं कि तू) दूसरे लोगों से कहता चला जा।"

मुफ़रद (एक) के लिए अरबी ज़बान में दो शब्द प्रयोग होते हैं। وَاحِد (वाहिद) और اَحَد (अहद) वाहिद के अर्थ होते हैं एक लेकिन इसके बोलने से दूसरे की तरफ़ ज़हन जाता है और कहने वाला समझता है कि एक के बाद दो है और दो के बाद तीन है और तीन के बाद चार है। अत: जबकि यह शब्द एक होने पर दलालत करता है परन्तु संख्या की सम्भावना का खण्डन नहीं करता। इसके ख़िलाफ़ अहद के अर्थ होते हैं अकेला और अकेले के बाद कोई दुकेला नहीं कहता। अत: इस शब्द के अर्थ यह होते हैं कि इस वजूद के साथ किसी दूसरे ऐसे ही वजूद की कोई सम्भावना नहीं। इस सूरत में अल्लाह तआला को अहद कहा गया है अर्थात उस की तौहीद (एकेश्वरवाद) कामिल का वर्णन किया गया है और बताया गया है कि अल्लाह तआला अपनी ज़ात में अकेला है। यह सोचा भी नहीं जा सकता कि इस प्रकार की कोई दूसरी ज़ात होगी। अत: इस सूरत में इस शब्द के लाने से अल्लाह तआला ने अपनी तौहीद (एकेश्वरवाद)-ए-कामिल का ऐलान कर दिया है।

अरबी शब्द इस जगह صَمَد (समद) है और समद के अर्थ होते हैं जो ग़नी हो अर्थात किसी का मुहताज न हो परन्तु कोई उस से ग़नी न हो। अर्थात कोई ऐसा वजूद न हो जो उसकी सहायता के बग़ैर क़ायम रह सके। अत: इस शब्द ने भी तौहीद (एकेश्वरवाद)-ए-कामिल को ज़ाहिर किया है। और बताया है कि समस्त मौजूदात उसकी सहायता के बग़ैर गुज़ारा नहीं कर सकते और इस को मौजूदात की सहायता की कोई आवश्यक नहीं। समद के अर्थ सदैव क़ायम रहने वाले के भी हैं और निहायत बुलंद शान वाले के भी हैं ये दोनों अर्थ भी पूर्ण तौहीद (पूर्ण एकेश्वरवाद) पर दलालत करते हैं। जो सदैव क़ायम रहेगा मौजूदात में से इस का कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता और जो बुलंदी में बहुत बढ़ जाएगा कोई दूसरी वस्तु उस तक पहुंच नहीं सकती। इसका भी यही अर्थ है कि वह अकेला है।

यह आयत भी तौहीद (एकेश्वरवाद) कामिल पर दलालत करती है क्योंकि जिसने किसी को जन्मा न हो वह या तो बाँझ होता है और या फिर ऐसी हस्तीयों में से होता है जो कि तग़य्युर-पज़ीर (बदलाव) नहीं होतीं जैसे पहाड़ियां और दरिया इत्यादि। लेकिन ख़ुदा तआला के सम्बन्ध में कहा गया है कि वह رَفِيْعٌ (रफ़ी) है अर्थात अपनी शान में बहुत बुलंद है। अत: पहाड़ों और दरियाओं को इस से कोई निसबत नहीं हो सकती और न वह जन्मा गया है के शब्द भी पूर्ण तौहीद (पूर्ण एकेश्वरवाद) पर दलालत करता है क्योंकि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त कोई ऐसा वजूद संसार में नज़र नहीं आता जिसको किसी ने नहीं जना, चाहे वह उपास्य कहलाता हो या न कहलाता हो।

पहले तौहीद (एकेश्वरवाद) ज़ाती का वर्णन किया था, अब तौहीद (एकेश्वरवाद) सिफ़ाती (गुणों) को वर्णन किया है। याद रखना चाहिए कि सिफ़ात में शरीक होने के यह अर्थ नहीं कि उसके समान कोई हरकत इन्सान से नहीं होती। इन्सान भी बसीर (देखने) और समीअ (सुनने वाला) है और ख़ुदा तआला भी बसीर और समीअ है। अत: बज़ाहिर तो यह एक साधारण बात नज़र आती है। लेकिन ख़ुदा तआला बसीर है परन्तु आँखों से नहीं देखता और ख़ुदा समीअ है परन्तु कानों से नहीं सुनता। वह अपनी ज़ात में बग़ैर उपकरणों के देखने वाला और बग़ैर उपकरणों के सुनने वाला है। अत: जबकि इन्सान बसीर और समीअ है परन्तु उस की सिफ़ात में एक समान नहीं कहला सकते।

अतिरिक्त इसके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूर्व तौहीद (एकेश्वरवाद) की धारणा समय और स्थान के साथ सीमित थी लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जो कलाम इलाही नाज़िल हुआ इस में अल्लाह तआला को "रब्बुल आलमीन" अर्थात समस्त संसारों का रब क़रार दिया गया और इस के अनुसार उस की समस्त सिफ़ात की पर्तो को ज़मान और मकान की सीमा से परें क़रार दिया गया।

तौहीद (एकेश्वरवाद) की हक़ीक़त और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रस्तुत करदा तौहीद (एकेश्वरवाद) की अज़मत शान का वर्णन करते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"स्मरण रहे कि वास्तविक एकेश्वरवाद जिस को ख़ुदा हम से स्वीकार कराना चाहता और जिसके स्वीकार करने से मोक्ष सम्बद्ध है वह यह है कि ख़ुदा के अस्तित्व को प्रत्येक भागीदार चाहे मूर्ति हो या मनुष्य, सूर्य हो अथवा चद्रमा, या अपने प्राण या अपना उपाय अथवा छल-कपट हो, से पवित्र समझना और उसके समक्ष किसी को सर्वशक्तिमान न ठहरान, किसी को प्रतिपालक न स्वीकार करना, किसी अन्य को सम्मान प्रदान करने वाला अथवा अपमानित करने वाला न समझना, किसी अन्य को सहायक स्वीकार न करना और यह कि अपना प्रेम विशेष उसी से सम्बद्ध करना, अपनी प्रार्थना विशेष उसी से सम्बद्ध करना। अत: किसी प्रकार का भी एकेश्वरवाद इन तीन प्रकार की विशिष्टताओं के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। प्रथम अस्तित्व की दृष्टि से एकेश्वरवाद अर्थात यह कि उसके अस्तित्व की तुलना में समस्त सृष्टि को ऐसा समझाना कि उसका अस्तित्व ही नहीं है, और समस्त सृष्टि को नश्वर और अवास्तविक विचार करना। द्वितीय विशेषताओं की दृष्टि से एकेश्वरवाद अर्थात यह कि प्रतिपाल और ख़ुदा होने के गुण परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य जीव में विद्यमान होना न स्वीकार करना, तृतीय अपने प्रेम, सच्चाई और शुद्धता की दृष्टि से एकेश्वरवाद अर्थात प्रेम, उपासना अदि के शिष्टचार में किसी अन्य को अल्लाह तआला का भागीदार न समझना और उसी में लीन होते जाना।"

(सिराजुद्दीन ईसाई के चार प्रश्नों का उत्तर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 12 पृष्ठ 349)

इसी तरह फ़रमाया "हम काफ़िर-ए-नेमत होंगे यदि इस बात का इक़रार न करें कि तौहीद (एकेश्वरवाद) हक़ीक़ी हम ने ईसी नबी के द्वारा से पाई और ज़िंदा ख़ुदा की पहचान हमें ईसी कामिल नबी के द्वारा से और उसके नूरो से मिली है और ख़ुदा के मुकालमात और सम्बोधित होने का शरफ़ भी जिससे हम उस के चेहरा से देखते हैं ईसी बुज़ुर्ग नबी के द्वारा से हमें उपलब्ध आया है इस हिदायत के सूरज की किरने धूप की तरह हम पर पड़ती है और उसी वक़्त तक हम मुनव्वर रह सकते हैं जब तक कि हम उस के मुक़ाबिल पर हैं।

(हकीकतुल वह्यी रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 119)

फिर फ़रमाया :

हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सच्चाई के प्रकट के लिए एक मुजद्दिद आज़म थे जो छुपी हुई सच्चाई को दुबारा संसार में लाए। इस फ़ख़र में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ कोई भी नबी शरीक नहीं कि आपने समस्त संसार को एक अन्धकार में पाया और फिर आपके ज़हूर से वह अन्धकार नूर से बदल गई। जिस क़ौम में आप ज़ाहिर हुए आप फ़ौत न हुए जब तक कि उस समस्त क़ौम ने शिर्क का चोला उतार कर तौहीद (एकेश्वरवाद) का जामा न पहन लिया।

(लैक्चर स्यालकोट रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 206)

असल हक़ीक़त यह है कि सब नबियों से अफ़ज़ल वह नबी है कि जो संसार का मुरब्बी-ए-आज़म है। अर्थात वह व्यक्ति कि जिसके हाथ से उपद्रवी संसार की इस्लाह पज़ीर हुई जिसने तौहीद (एकेश्वरवाद) गुमी हुई और लुप्त हो चुकी को फिर ज़मीन पर क़ायम किया।

(बराहीन अहमदिया भाग 2, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 97 हाशिया नंबर 6)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की समस्त ज़िंदगी अल्लाह तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) और उसकी उबूदीयत के क़ियाम के लिए गुज़री और आपने अपने पैदा करने वाले से इस कदर मुहब्बत की कि उसकी मिसाल संसार में कहीं भी नहीं मिलती इसकी गवाही देते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى (अल् ज़ोहा : 8) कि अल्लाह तआला ने तुझ को अपनी मुहब्बत में सरशार पाया और फिर हिदायत दी । हद दर्जा इबादत इलाही और ख़ुदा के प्रेम के परिणाम में ही आप पर ग़ार-ए-हिरा में वह्यी इलाही का अवतरण हुआ और आपकी पहली वही से ही बुनियादी तौर पर तौहीद (एकेश्वरवाद) का संदेश दिया फ़रमाया : اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ (अल् अलक 2) अर्थात अपने पैदा करने वाले के नाम से पढ़। इसलिए समस्त ज़िंदगी आप यही संदेश पढ़ते पढ़ाते रहे और फिर हर समय अपने पैदा करने वाले पर फ़िदा रहे कि दुश्मनों को भी इक़रार करना पड़ा कि شِقَ مُحَمَّدٌ رَبَّهٗ कि मुहम्मद तो अपने रब पर आशिक़ हो गया है। आप सदैव अल्लाह तआला की मुहब्बत प्राप्त करने के लिए दुआएं करते रहते थे। इसलिए आप साधारणता यह दुआ करते कि اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ أَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِىْ يُبَلِّغُنِىْ حُبَّكَ ۔ हे अल्लाह मैं तुझसे तेरी मुहब्बत का प्रश्न करता हूँ और उसकी मुहब्बत भी जो तुझसे मुहब्बत करता है। मैं तुझसे ऐसे अमल की तौफ़ीक़ मांगता हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुंचा दे।

इस्लामी शिक्षा का पहला सिद्धांत ही क़ियाम तौहीद (एकेश्वरवाद) है और उसका आधार कलमा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ पर है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) इस क़दर प्यारा था कि आपने फ़रमाया कि जो व्यक्ति सिदक़ दिल से यह कलिमा पढ़ता है अपने लिए अल्लाह तआला की ख़ुशनुदी और उसके जन्नत के दरवाज़ों को खोलने का कारण हो जाता है। इसी तरह एक अवसर पर आपने फ़रमाया اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ अर्थात वर्णन में से सबसे अफ़ज़ल वर्णन तौहीद (एकेश्वरवाद) के कलिमा का जाप करना है । कोई मुसीबत सामने आती तो तब भी आप इन शब्द में कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) बुलंद फ़रमाते لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं वही अज़मत वाला और बुर्दबार है। इस कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) की ख़ातिर आपने हर तरह के दुख और तकालीफ़ उठाईं और सहाबा किराम की ऐसी जमाअत पैदा फ़र्मा दी जो कि कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) पर जांनिसार थी और उसकी ख़ातिर एक मज़बूत चट्टान की तरह खड़ी रही। आपने अपनी उम्मत को शिक्षा दी कि दिन में कम अज़ कम सौ मर्तबा कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) बुलंद करें जिसके शब्द यह हैं :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

इस्लाम के सिद्धांत वहदानियत की अज़ीम हिक्मत यह है कि इस के परिणाम में समस्त संसार के इन्सान एक ही लड़ी में पिरो कर आपस में भाई भाई बन जाते हैं और सारी मख़लूक़ अल्लाह का परिवार हो कर न केवल एकता और एकजुटता की तार में पिरोई जाती है बल्कि सबका दृष्टिकोण और केंद्र एक हो जाता है। अत: कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) है जिससे समस्त संसार को एक प्लेटफार्म पर इकट्ठा किया जा सकता है। दूसरी तरफ़ अनेक ख़ुदाओं के मानने वाले कभी एक नहीं हो सकते। यही कारण है कि इस कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) की ख़ातिर आपने और आपके सहाबा ने जान माल औलाद और वतन हर तरह की क़ुर्बानी दी अपने से कई गुना दुश्मन से डट कर मुक़ाबला किया और शहादतों के जाम पिए।

आपको कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) से इस क़द्र मोहब्बत थी कि यदि जानी दुश्मन कलिमा पढ़ लें तो उनकी माफ़ी का भी ऐलान किया जाता और यदि कोई सहाबी कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) पढ़ लेने वाले दुश्मन को क़तल करता तो आप उस से सख़्त नाराज़गी का प्रकट किया फ़रमाते थे। इसलिए हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब एक जंग के अवसर पर कलिमा पढ़ लेने वाले दुश्मन को क़तल कर और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह वाक़िया बताया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत उसामा पर सख़्त नाराज़ हुए उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर उसने तलवार के डर से कलिमा पढ़ा था तो आपने फ़रमाया कि क्या तुमने उस का दिल चीर कर देखा था कि उसने वाक़ई तलवार के डर से कलिमा पढ़ा था या नहीं।

कलिमा तौहीद (एकेश्वरवाद) के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस क़दर ग़ैरत थी कि जंग-ए-उहद के अवसर पर जब एक मर्तबा मुस्लमानों को आरिज़ी शिकस्त और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मुस्लमानों ने एक पहाड़ी के दामन में निहायत ख़ामोशी से पनाह ली तो कुफ़्फ़ार ने समझा कि हमने मुस्लमानों के बड़े-बड़े लीडरों को मार दिया है इस पर उन्होंने बुलंद आवाज़ से पूछा क्या तुम में मुहम्मद हैं (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा से फ़रमाया ख़ामोश रहो फिर उन्होंने पूछा क्या तुम में अबूबकर हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ख़ामोश रहो फिर उन्होंने बुलंद आवाज़ से पूछा क्या तुम में उमर हैं, क्या उसमान हैं। जब मुस्लमानों की तरफ़ से बिल्कुल ख़ामोशी रही तो उन्होंने सोचा कि ये सब फ़ौत हो चुके हैं इस पर उन्होंने "ऊलूल हुबुल" का नारा बुलंद किया कि हमारे हुबुल बुत की जय हो। शिर्क से भरे हुए इस नारे को सुनकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ैरत तौहीद (एकेश्वरवाद)

शेष पृष्ठ 10 पर

पृष्ठ 1 का शेष

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन देसी पादरियों के सम्बन्ध में फ़रमाते हैं कि ये मुर्तद होने वाले

"अत्यधिक बेचैन कर देने वाली भूख के कारण गिरजाघरों में जमा हुए और यह सब कुछ ईसाइयों की धन-सम्पत्ति पर लालच और उनके ठाट-बाट पर नज़र डालने से पैदा हुआ और फिर उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर घोर अपमानजनक बातें करके पादरियों को ख़ुश करना शुरू किया और उनके लिए नित नई-नई अपमानजनक बातें और आरोप रचते ताकि उनको दिखलावें कि वे इस्लाम से विमुख और ईसाई धर्म में बड़े पक्के हैं और वे यह इसलिए करते ताकि वे उन अपमान और आरोप की बातों के द्वारा उनकी विशेष निकटस्थता प्राप्त करें और उनके माध्यम से अपनी लालसाएँ पूरी करें"

(नूरुल हक़ - भाग 1 रूहानी ख़ाज़ाएन भाग 8 पृष्ठ 47)

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"मुझे आश्चर्य होता है कि ये लोग पढ़े लिखे कहलाते हुए और तहज़ीब का दावा करते हुए करोड़ों इन्सानों के पेशवाओं पर काल्पनिक बातों के आधार पर किस तरह हमला कर देते हैं हालाँकि स्वयं उन लोगों के अख़लाक़ इस क़दर गिरे हुए और ज़लील होते हैं कि इन्सानियत को उनसे शर्म आती है उनका यह साहस केवल इस कारण से है कि इस वक़्त ईसाइयों को हुकूमत प्राप्त है और उनको यह शर्म भी नहीं आती कि जब मुस्लमान संसार पर हाकिम थे और मसीहियों का इस से भी पतला हाल था कि जो इस वक़्त मुस्लमानों का मसीहियों के मुक़ाबिल पर है उस वक़्त भी मुस्लमानों ने यसू नासरी के बारे में सख़्त शब्द कभी प्रयोग नहीं किए। मुस्लमानों ने हज़ार वर्ष तक मसीही देशों पर हुकूमत करके उन के सरदार की जिस इज़्ज़त का प्रकट किया काश मसीही लोग दो तीन सौ साल की हुकूमत पर ऐसे घमंडी न हो जाते कि इस नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर इस तरह दरिंदों की तरह हमले न करते और मुस्लमानों के इस एहसान का कुछ तो ख्याल करते कि उन्होंने यसू के ख़िलाफ़ कभी आक्रामक क़दम नहीं उठाया अन्यथा हक़ यह है कि मुस्लमान यसू के सम्बन्ध में इस से बहुत ज़्यादा कह सकते हैं जो मसीही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में कहते हैं।" (तफ़सीर कबीर भाग प्रथम पृष्ठ 253)

इस आरोप का उत्तर कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी 9 वर्ष की आयु में हुई

अब हम पादरी फ़तह मसीह के इस प्रश्न का कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस ज़माना में गर्वनमैंट अंग्रेज़ी के अधीन होते तो गर्वनमैंट उनसे क्या व्यवहार करती? और इसी तरह 9 वर्ष की आयु में शादी पर आरोप का उत्तर निम्न में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान शब्द में प्रस्तुत करते हैं आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"आपने जो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का वर्णन करके नौ वर्ष की रस्म शादी का वर्णन लिखा है, प्रथम तो नौ वर्ष का वर्णन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़बान से साबित नहीं और न इस में कोई वह्यी हुई और न बारंबार के अख़बार से साबित हुआ कि अवश्य नौ वर्ष ही थे। केवल एक रावी ने वर्णन किया है। अरब के लोग कैलेंडर शीट नहीं रखा करते थे क्योंकि अनपढ़ थे और दो तीन वर्ष की कमी बेशी उनकी हालत पर नज़र कर के एक आम बात है जैसे कि हमारे मुल्क में भी अधिकतर अनपढ़ लोग दो-चार वर्ष के फ़र्क़ को अच्छी तरह सुरक्षित नहीं रख सकते। फिर यदि फ़र्ज़ के तौर पर स्वीकार भी कर लें कि वास्तव में दिन दिन का हिसाब कर के नौ वर्ष ही थे, लेकिन फिर भी कोई अक़्लमंद आरोप नहीं लगाए गा परन्तु मूर्ख का कोई ईलाज नहीं। हम आपको अपनी पत्रिका में साबित कर के दिखा देंगे कि वर्तमान के शोध कर्ता डाक्टरों का इस पर इत्तिफ़ाक़ हो चुका है कि नौ वर्ष तक भी लड़कियां बालिग़ हो सकती हैं बल्कि सात वर्ष तक भी औलाद हो सकती है और बड़े बड़े मुशाहदात से डाक्टरों ने इस को साबित किया है और स्वयं सैकड़ों लोगों की यह बात चशमदीद है कि इसी मुल्क में आठ आठ नौ नौ वर्ष की लड़कियों के यहां औलाद मौजूद है।

(नूरुल क़ुरआन नंबर 2 रूहानी ख़ाज़ाएन भाग 9 पृष्ठ 377)

इस आरोप का उत्तर कि गर्वनमैंट के क़ानून में शादी की आयु 18 वर्ष है

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

आप पर तो कुछ भी अफ़सोस नहीं और न करना चाहिए क्योंकि आप केवल घृणा करने वाले ही नहीं बल्कि प्रथम स्थान के मूर्ख भी हैं। आपको अब तक इतनी भी ख़बर नहीं कि गर्वनमैंट के क़ानून जनता के निवेदन के अनुसार उनकी रस्म और सोसाइटी की आम कारणों के आधार पर तैयार होते हैं। उनमें फिलासफरों की तर्ज़ पर तहक़ीक़ात नहीं होती और जो बार-बार आप गर्वनमैंट अंग्रेज़ी का वर्णन करते हैं यह बात बिल्कुल सच्च है कि हम गर्वनमैंट अंग्रेज़ी के शुक्रगुज़ार हैं और उसकी भलाई चाहते हैं और जब तक ज़िंदा हैं रहेंगे, परन्तु इसके साथ हम इनके बारे में यह नहीं समझते की उनसे गलती नहीं हो सकती और न उस के क़वानीन को हिकमत से परिपूर्ण तहक़ीक़ातों पर आधारित समझते हैं बल्कि क़वानीन बनाने का सिद्धांत जनता की अधिक राय पर है। गर्वनमैंट पर कोई वह्यी नाज़िल नहीं होती ताकि वह अपने क़वानीन में ग़लती न करे यदि ऐसे ही क़वानीन सुरक्षित होते तो सदैव नए-नए क़ानून क्यों बनते रहते इंग्लिस्तान में लड़कियों की बलूग़त का समय (18) वर्ष क़रार दिया है और गर्म मुल्कों में तो लड़कियां बहुत जल्दी-जल्दी बालिग़ हो जाती हैं। आप यदि गर्वनमैंट के क़वानीन को ख़ुदा का कानून समझते हैं कि उनमें ग़लती की सम्भावना नहीं तो हमें वापसी पर डाक के द्वारा सूचित कर दें ताकि इंजील और क़ानून का थोड़ा सा मुक़ाबला करके आपकी कुछ ख़िदमत की जाए। उद्देश्य गर्वनमैंट ने अब तक कोई विज्ञापन नहीं दिया कि हमारे क़वानीन भी तौरेत और इंजील की तरह ख़ता और ग़लती से ख़ाली हैं यदि आपको कोई विज्ञापन पहुंचा हो तो उस की एक नक़ल हमें भी भेज दें फिर यदि गर्वनमैंट के क़वानीन ख़ुदा की पुस्तकों की तरह ख़ता से ख़ाली नहीं तो उनका वर्णन करना या तो मूर्खता के कारण से है या द्वेष के कारण से परन्तु आप विकलांग हैं। (इसी से पृष्ठ 378)

यूरोप के डाक्टरों का शोध कि 9 वर्ष बल्कि 7 वर्ष तक भी लड़कियां बालिग़ हो जाती हैं

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

यदि गर्वनमैंट को अपने क़ानून पर विश्वास था तो क्यों उन डाक्टरों को सज़ा नहीं दी जिन्हों ने वर्तमान में यूरोप में बड़े विस्तार की तहक़ीक़ात से नौ (9) वर्ष बल्कि सात वर्ष को भी कुछ महिलाएंओं की बलूग़त का समय क़रार दे दिया है और नौ (9) वर्ष की आयु के सम्बन्ध में आप आरोप कर के फिर तौरेत या इंजील का कोई हवाला नहीं दे सके केवल गर्वनमैंट के क़ानून का वर्णन किया इस से ज्ञात हुआ कि आपका तौरेत और इंजील पर ईमान नहीं रहा अन्यथा नौ वर्ष की हुर्मत या तो तौरेत से साबित करते या इंजील से साबित करनी चाहिए थी पादरी साहिब यही तो दजल है कि इल्हामी पुस्तकें के मसायल में आपने गर्वनमैंट के क़ानून को प्रस्तुत कर दिया। (इसी से पृष्ठ 379)

इस गुस्ताख़ी भरे प्रश्न का इल्ज़ामी उत्तर कि आँहज़रत सल्लल्लाहो

अलैहि व सल्लम यदि इस ज़माना में होते तो गर्वनमैंट अंग्रेज़ी उन से किया व्यवहार करती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

अगर आपके निकट सरकार के क़ानून की सारी बातों में कोई त्रुटि नहीं पाई जाती और इल्हामी किताबों की तरह बल्कि उनसे भी श्रेष्ठ हैं तो मैं आपसे पूछता हूँ (1) कि जिन नबियों ने अंग्रेज़ी कानून के विपरीत कई लाख दूध पीते बच्चे क़त्ल किए यदि वे इस समय होते तो सरकार उनसे क्या व्यवहार करती? (2) अगर वे लोग सरकार के सामने पकड़ कर लाए जाते जिन्होंने दूसरों के खेतों के गुच्छे तौड़ कर खा लिए थे तो सरकार उनको और उनको अनुमति देने वाले को क्या क्या दण्ड देती? (3) फिर मैं पूछता हूँ कि वह व्यक्ति जो अंजीर का फल खाने दौड़ा था और इन्जील से सिद्ध है कि वह अंजीर का पेड़ उसकी जायदाद न था अपितु दूसरे की जायदाद था यदि वह व्यक्ति सरकार के सामने यह हरकत करता तो सरकार उसको क्या दण्ड देती? (4) इन्जील से यह भी सिद्ध है कि बहुत से सूअर जो दूसरों की जायदाद थे और पादरी क्लार्क के कथनानुसार जिनकी संख्या दो हज़ार थी उनको मसीह ने मार डाला, अब आप ही बताएँ कि दण्डविधान की दृष्टि से उसका क्या दण्ड है?

अभी इतना लिखना काफ़ी है उत्तर अवश्य लिखें ताकि फिर और भी बहुत से प्रश्न किए जाएँ।

पादरी फ़तह मसीह को नसीहत कि ऐसे आरोपों से परहेज़ करना चाहिए

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

पादरी साहिब! आपका यह विचार कि (9) नौ वर्ष की लड़की के साथ सहवास करना व्यभिचार है, पूर्णत: असत्य है। आपकी ईमानदारी यह थी कि आप इंजील से इसको सिद्ध करते। इन्जील ने आपको धक्के दिए और वहाँ कुछ न मिला तो सरकार के पैरों पर आ पड़े। याद रखें कि यह ग़ालियाँ केवल शैतानी (पैशाचिक) द्वेष से हैं। पवित्र नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुराचार का आरोप लगाना यह शैतानी (पैशाचिक) प्रवृत्ति के लोगों का काम है। इन दो पवित्र नबियों अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर कुछ नीच और दुष्ट प्रकृति के लोगों ने बहुत झूठे आरोप लगाए हैं। अत: उन दुष्टों ने, लानतुल्लाहि अलैहिम (उन पर अल्लाह की लानत हो) पहले नबी को तो व्यभिचारी कहा जैसा कि आप ने, और दूसरे को अवैध संतान कहा जैसा कि दुष्ट प्रकृति के यहूदियों ने। आपको चाहिए कि ऐतिराज़ों से बचें।

(इसी से पृष्ठ 680)

इस गुस्ताख़ी भरे प्रश्न का हक़ीक़ी और लर्ज़ा ख़ेज़ उत्तर कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यदि इस ज़माना में होते तो गर्वनमैंट अंग्रेज़ी उनसे क्या व्यवहार करती

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

पादरी साहिब! आपका यह प्रश्न कि अगर आज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसा व्यक्ति अंग्रेज़ी सरकार के युग में होता तो सरकार उस से क्या व्यवहार करती?

आपको विदित हो कि अगर वह दोनों लोकों का सरदार इस सरकार के युग में होता तो यह भाग्यशाली सरकार उनके जूते उठाने को अपना गर्व समझती जैसे कि रोम का बादशाह केवल फोटो देखकर उठ खड़ा हुआ था। आपकी यह मूर्खता और दुर्भाग्य है कि इस सरकार पर ऐसी बद्गुमानी रखते हैं कि मानो वह ख़ुदा के अवतारों की दुश्मन है। यह सरकार इस युग में छोटे-छोटे मुसलमान लीडरों का सम्मान करती है। देखो नसरुल्ला खान जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दासों जैसा भी दर्जा नहीं रखता हमारी तेजस्विनी महारानी क़ैसर: हिन्द (विक्टोरिया) ने उसका कैसा सम्मान किया। फिर वह महामान्य पवित्र अस्तित्व रखने वाला जिसका इस संसार में वह स्थान था कि बादशाह उसके चरणों पर गिरते थे अगर वह इस समय में होता तो यह सरकार नि:सन्देह उससे सेवा और आवभगत का व्यवहार करती। ख़ुदा के कामों के आगे इन्सानी सरकारों का विनय और विनम्रता के अतिरिक्त कुछ नहीं बन पड़ता। क्या आपको ज्ञात नहीं कि क़ैसर रोम जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में ईसाई बादशाह था और इस सरकार से प्रताप में कुछ कम न था। वह कहता है कि यदि मुझे यह सौभाग्य प्राप्त होता कि मैं उस महान नबी की संगति में रह सकता तो मैं उनके पाँव धोया करता। अत: जो रोम के बादशाह ने कहा नि:सन्देह यह भाग्यवान सरकार भी वही बात कहती, अपितु इससे बढ़कर कहती।

एक हज़ार रुपय का वैभवशाली उपहार का चैलेंज

फ़रमाया

यदि हज़रत मसीह के बारे में उस समय के किसी छोटे से जागीरदार ने भी यह बात कही हो जो रोम के बादशाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में कही थी जो आज तक प्रमाणित इतिहास और हदीसों में मौजूद है, तो हम आपको अभी एक हज़ार रुपया नकद इनाम के तौर पर देंगे यदि आप सिद्ध कर सकें और यदि आप यह प्रमाण न दे सकें तो इस लज्जाजनक ज़िन्दगी से आपके लिए मरना अच्छा है क्योंकि हमने सिद्ध कर दिया कि रोम का बादशाह इस शक्तिशाली सरकार के समतुल्य था। अपितु इतिहास से ज्ञात होता है कि उस युग में उसकी शक्ति के बराबर दुनिया में और कोई शक्ति मौजूद न थी, हमारी सरकार तो उस दर्जे तक नहीं पहुँची। फिर जब क़ैसर राजा होते हुए आह भर कर यह बात कहता है कि अगर मैं उस महामान्य की सेवा में पहुँच सकता तो उस पवित्रात्मा के पाँव धोया करता तो क्या यह सरकार उससे कम सम्मान करती। मैं दावे से कहता हूँ कि अवश्य यह सरकार भी ऐसे महान नबी के पाँव में गिरना अपना गर्व समझती। क्योंकि यह गवर्नमेन्ट उस आसमानी बादशाह की इन्कारी नहीं जिसकी ताक़तों के आगे इन्सान एक मरे हुए कीड़े के समान भी नहीं। हमने एक विश्वस्त सूत्र से सुना है कि हमारी महारानी विक्टोरिया वास्तव में इस्लाम से प्रेम रखती है और उसके दिल में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बड़ा सम्मान है। अत: एक मुसलमान विद्वान से वह उर्दू भी पढ़ती है। उनकी ऐसी प्रशंसाओं को सुनकर मैंने इस्लाम की ओर एक विशेष सन्देश से महारानी विक्टोरिया को संबोधित किया था। अत: यह बहुत बड़ी ग़लती है कि आप लोग इस मर्तबा को पहचानने वाली सरकार को भी एक नीच और कमीने पादरी की तरह सोचते हैं। जिनको ख़ुदा राजपाट और धन दौलत देता है उनको विवेक और बुद्धि भी देता है। हाँ अगर यह प्रश्न प्रस्तुत हो कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति इस सरकार के साम्राज्य में यह शोर मचाता है कि मैं खुदा हूँ या खुदा का बेटा हूँ तो सरकार उसका निवारण क्या करती? तो इसका उत्तर यही है कि यह दयालु सरकार उसको किसी डाक्टर के सुपुर्द करती ताकि उसके दिमाग का उपचार हो या उस बड़े घर में क़ैद रखती जैसा कि लाहौर में इस प्रकार के बहुत से लोग एकत्र हैं।

(इसी से पृष्ठ 382)

आगे इन्शा अल्लाह सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक और उपहारी चैलेंज हम पाठकों की ख़िदमत में प्रस्तुत करेंगे।

(मन्सूर अहमद मसरूर)

(अनुवादक सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

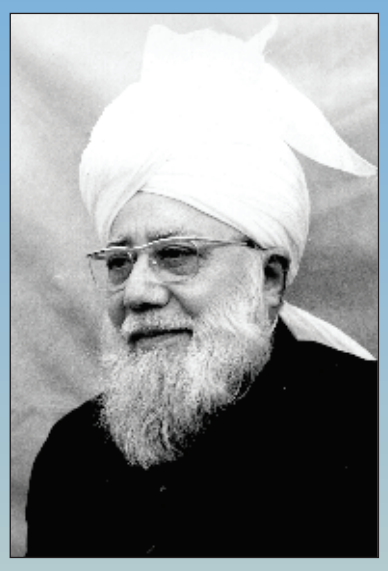

हम अपने प्यारे आक़ा को अपने लिए हमेशा आदर्श बनाए रखेंगे

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

"हम ने नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपना आदर्श और मार्गदर्शक स्वीकार किया है और अपने रब रहीम के हुक्म के अधीन और उस की प्रसन्नता और ख़ुशी की प्रप्ति के लिए यह अह्द किया है कि हम अपने महबूब आक़ा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने लिए हमेशा आदर्श बनाए रखेंगे और वही रंग अपनी आदतों पर और अपनी ज़िंदगियों पर चढ़ाने की कोशिश करते रहेंगे जिस रंग को अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र स्वभाव पर चढ़ाया था और यह ख़ुदा तआला की विशेषताओं का सुन्दर रंग था।"

(ख़ुतबात-ए-नासिर, भाग 1 पृष्ठ 588 ख़ुतबा जुम्मा 24 फ़रवरी 1967)

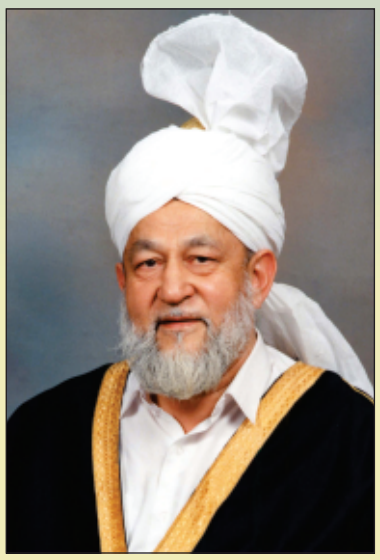

कोई और संसार का नूर उसके सामने चमकने की साहस नहीं रखता

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

"जैसे संसार के निज़ाम में सूरज का उदाहरण है वैसे ही रूहानी निज़ाम में हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वजूद है जो ख़ुदा के नूर का वह पर्दा है जिससे अधिक प्रकाश का पर्दा हमारे संसार के इन्सानों को दिखाई नहीं दिया, न दे सकता है। वह ऐसा नूर का रोशन पर्दा है कि जब ज़ाहिर होता है तो हर नूर वाला उस के सामने मिट जाता है न चांद का वजूद रहता है न सितारे चमकते हैं कोई और संसार का नूर उस के सामने चमकने का साहस नहीं रखता ..... यह वह नूर है जिसकी तरफ़ हम ने समस्त संसार को बुलाना है और इसी का हमें आदेश दिया गया है।"

(ख़ुतबात-ए-ताहिर, भाग 15 पृष्ठ 160, ख़ुतबा जुम्मा, 1 मार्च 1996 ई.)

इतना दरूद सिदक़-ए-दिल के साथ बिखेरें कि फ़िज़ा का हर कण दरूद से महक उठे

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हमारा भी काम है कि अपनी दुआओं को दरूद में ढाल दें और फ़िज़ा में इतना दरूद सिदक़-ए-दिल के साथ बिखेरें कि फ़िज़ा का हर कण दरूद से महक उठे और हमारी समस्त दुआएं इस दरूद के माध्यम से ख़ुदा तआला के दरबार में पहुंच कर क़बूलियत का स्थान पाने वाली हों। यह है इस प्यार और मुहब्बत का इज़हार जो हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से होना चाहिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऑल (सन्तान) से होना चाहिए।"

(ख़ुतबात-ए-जुम्मा 24 फ़रवरी 2006, उद्धरित अख़बार बदर 13 अप्रैल 2006 ई.)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

The Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No. GDP 45/2020-2022 | Vol .6 30 September-07 october 2021 issue no 39-40

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के उपदेश

समस्त नबियों से श्रेष्ठ वह नबी है जो संसार का महान शिक्षक और संरक्षक है

"वास्तविकता यह है कि समस्त नबियों से श्रेष्ठ वह नबी है जो संसार का महान शिक्षक और संरक्षक है अर्थात् वह मनुष्य जिसके हाथों से संसार के बड़े बड़े उपद्रवों का सुधार हुआ जिस ने लुप्त और गुप्त एकेश्वरवाद को पुनः पृथ्वी पर स्थापित किया, जिस ने समस्त मिथ्या धर्मो को सबूतों और तर्कों से परास्त करके प्रत्येक पथ भ्रष्ट के संदेहों का निवारण किया, जिसने प्रत्येक नास्तिक के भ्रमों को दूर किया तथा मुक्ति के सच्चे साधन ..... सच्चे सिद्धांतों की शिक्षा द्वारा नए सिरे से प्रदान किया।"

(बराहीन-ए-अहमदिया भाग 2, रूहानी ख़ज़ायन भाग 1, पृष्ठ 97, हाशिया नंबर 6)

उच्च श्रेणी का एक वर्ण, निश्छल, साफ़ बातिन नबी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उच्च श्रेणी के एक वर्ण, निश्छल, ख़ुदा के लिए उत्साही और जान पर खेलने वाले प्रजा की उम्मीद और आशा से बिल्कुल विमुख तथा केवल ख़ुदा पर भरोसा करने वाले थे, जिन्हों ने ख़ुदा की इच्छा और इरादे में आसक्त और फ़ना हो कर इस बात की कुछ भी परवाह नहीं की कि एकेश्वरवाद की घोषणा करने से मेरे सिर पर क्या क्या विपति आएगी तथा मुश्रिकों के हाथ से क्या कुछ कष्ट और दुख उठाना होगा।

(बराहीन-ए-अहमदिया भाग 2, रूहानी ख़ज़ायन भाग 1, पृष्ठ 111)

यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है यह किस उच्च श्रेणी का नबी है

मैं सदैव आश्चर्य की दृष्टि से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ारों दरूद और सलाम उस पर) यह किस उच्च श्रेणी का नबी है। इस के उच्च स्थान की सीमा ज्ञात नहीं हो सकती तथा उसके पुनीत प्रभाव का अनुमान लगाना मनुष्य का कार्य नहीं। खेद कि उसे यथा योग्य नहीं पहचाना गया। वह एकेश्वरवाद जो संसार से लुप्त हो चुका था वही एक योद्धा है जो उसे दोबारा संसार में लाया, उसने ख़ुदा से असीम प्रेम किया तथा लोगों की असीम सहानुभूति में उसके प्राण निकले। इसलिए ख़ुदा ने जो उसके हृदय के भेद से परिचित था उसे समस्त अंबिया तथा समस्त अगलों और पिछलों पर श्रेष्ठता प्रदान की।

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 22, पृष्ठ 118)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad